इंसान बना हैवान

ब्रजेश कुमार

इंसान

बना

हैवान

ब्रजेश कुमार

माता पिता एवं

गुरू को सादर समर्पित

आमुख

इंसान बना हैवान

इंसान बना हैवान पुस्तक सत्य को सामने लाने का ऐसा आईना है,

जिसमें मानव ज़ब मानव का चेहरा देखता है तो दिल दहल उठता है,

मुस्कुरा कर मिलने वालों में कौन दोस्त कौन दुश्मन जहाँ पता ही नहीं !

इंसान ने तो इंसानी केवल नकाब ही ओढ़ रखे हैं अब, वास्तव में तो अब हैवान बन चुका है इंसान !

हमारे पूर्वजों ने लड़ाई लड़ी थी मानवता के लिये,लेकिन क्या दयनीय स्थिति है हम लोगो की!

भीड़ में कोई ऐसा ढूंढ़ना मुश्किल हो जाता है, जो अपने चंद स्वार्थो की पूर्ति के लिए देश की जड़ो को काटने में ना लगा हो !

कोई डॉक्टर के वेश में तो कोई वकील के वेश में, चेहरों पर चेहरे ओढे पूर्वजों की बनाई दुनिया को सरे आम अपमानित कर रहें हैं !

ये पुस्तक एक प्रहार है, उन सब नकाबपोशो पर जिन्होंने खुद को इंसानी जामे से ढक रखा है !

ये पुस्तक एक चिंगारी है जिसकी ज्वाला ज़ब सच्चे इंसान तक पहुँच जाएगी तो हैवानों के चेहरों पर लगे नकाब खुद ब खुद सभी को स्पष्ट दिखने लगेंगे !

इंसान की शक्ल में हैवान, कोई भी मौका चूकता नहीं कि लाभ कैसे अर्जित हो पाए ! साम दाम दंड भेद हर प्रक्रिया अपना लेता है कि किस तरह खुद का भला हो जाये, इस सब में कितनों की जान से खेल गया उसे परवाह नहीं !

कोरोना संकट से झूझते देश को भी छोड़ा नहीं इन इंसानी वेशधारियों ने !

इतनी बड़ी महामारी से लड़ते हुए देश में जहाँ लाशों का ढेर लगा है, वहा पर 400रूपये का आक्सीजन का सिलेंडर 4000 मे मिल रहा हो तथा इंजेक्शन और दबाईयो की कालाबाजारी खुले आम हो रही हो ! ऐसी भारी विपदा के समय में आवश्यक वस्तुओं को 1 रूपये की जगह 10 रूपये में बेच रहे है !

मुसीबत के समय ज़ब अपने लोगो को सहारे की आवश्यकता है उस समय कुछ लोग मानवता की सारी सीमाओं को लाघकर मज़बूरी का फायदा उठा रहे हैं, इतनी आर्थिक तंगी के समय में भी, उन्हें दस गुना दाम देकर भी आवश्यकता की वस्तुओं को खरीदना ही है !

ये मानव ही नहीं तो मानवता की उम्मीद हम कैसे करें ! ये तो अमानवीयता की पराकाष्ठा है !

इंसान बना हैवान पुस्तक एक आलोचनात्मक प्रस्तुति है, जो सोये देश के सच्चे इंसानों को विचारों के कोलाहल से जगा देने का एक प्रयास है !

याद रखिये जैसे परिवार अपना वैसे ही देश भी अपना है ! अपनों की तरह देश संभालें, सब कुछ संभल जायेगा !

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका	पृष्ठ संख्या
1.	युवाओं में बढ़ते अपराध	
2.	इंसान से नाराज़ प्रकृति	
3.	समाज को बीमारियों की तरफ धकेलता मानव	
4.	इंसान का विकराल रूप	
5.	महिला उत्पीड़न	
6.	बढ़ते बाल अपराध	
7.	रक्षक ही बने भक्षक	
8.	संस्कृति से विमुख होता इंसान	

1.

युवाओं में बढते अपराध

संसार में प्रत्येक देश की तरक्की के पीछे युवाओं का बहुत बड़ा योगदान है। जब भी किसी देश को जरूरत पडी है तभी इस युवा पीढी ने अपनी जवानी के बल पर असम्भव को सम्भव कर दिखाया है। युवा पीढी में वह ताकत तथा साहस होता है जिसे ठान ले उसे पूरा कर के ही दिखाती है! आज संसार में सबसे युवा आबादी वाला देश भारत है! यहां पर 65 प्रतिशत आबादी की उम्र 35 साल से कम है। इस बात को कहने में कोई संदेह नहीं है कि भारत आज जवानी / युवाओं से लबालब भरा हुआ

है। आज जिस युवा पीढी के बल पर भारत विकास के पथ पर आगे बढ़ने का दम्भ भर रहा

है! आज उस युवा पीढी को नशे नाम की दीमक धीरे धीरे सेंध लगा रही है। आज इस दीमक ने इतना पैर पसार लिया है कि युवा पीढी इसकी गिरफ्त में आ चुकी है। जो आज अत्यन्त चिन्ता का विषय बन चुका है।

इस भीषण स्थिति को देखकर देश के कर्णधारों के कानों पर जू तक नहीं रेंगती! उनको तो केवल राजस्व का मुनाफा ही नजर आता है । स्थिति इतनी भयानक होती जा रही है कि 18 वर्ष के कम उम्र के बच्चे मौज मस्ती के नाम पर बीडी, सिगरेट,तम्बाकू और गुटखा आदि का सेवन कर रहें हैं। ये मौज मस्ती ही धीरे धीरे उनकी जवानी को निगल रही है। आज बडे- बडे विज्ञापनों के माध्यम से युवाओं को भरमाया जाता है और इनकी ओर अग्रसर होने के लिए तरह तरह के विज्ञापन रोज देखने के लिए मिल जाते हैं ।

चाइल्ड लाइन इण्डिया फाउन्डेशन 2014 रिर्पोट के अनुसार देश में 65 प्रतिशत नशाखोरी से युवा ग्रस्त हैं जिनकी उम्र 18 वर्ष से कम है तथा सरकारी आंकडों की मानों तो देश की 70 प्रतिशत आबादी किसी ना किसी तरह का नशा करती है। युवाओं के साथ युवतियों के ग्राफ में भी लगातार वृद्धि हो रही है। आज शराब,गुटखा,तम्बाकू और सिगरेट आदि का नशा करने वाले युवाओं में तीन में से एक किसी न किसी लत का आदि है। ”

अगर शराब की बात करें तो भारत के लोगों में यह ग्राफ बहुत तेजी से बढा है और इस भयानक बीमारी ने प्रतिदिन हजारों परिवारों को उजाड रखा है। बीस साल पहले जहां 300 लोगों में से एक व्यक्ति शराब पीता था! अगर आज का ग्राफ देखें तो 15 से 20 लोगों में से एक व्यक्ति शराब पीता है जो आज अपने आप में एक गंभीर विषय बन गया है। लेकिन आज इस भयानक बीमारी से महिलाएं भी अछूती नहीं रहीं हैं। महिलाओं में शराब के प्रति बढता ग्राफ भारत जैसे संस्कृतिशील देश के लिए अत्यन्त शर्मनाक स्थिति है। आज उच्च वर्ग की महिलाओं में यह फैशन के रूप में आरम्भ होकर धीरे धीरे आदत में बदल जाती है। अगर भारत में महिलाओं के शराब पीने के आंकडों को देखें तो 20 से 30 प्रतिशत महिलाएं इसकी गिरफ्त में आ चुकीं हैं।

“ विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिर्पोट के अनुसार 30 प्रतिशत भारतीय शराब का सेवन करते हैं । जिसमें 10 से 13 प्रतिशत प्रतिदिन शराब पीने वाले हैं बाकि बचे हुए बुरी तरह शराब की लत के शिकार हैं । इन आंकडों को देखकर ऐसा लगता है जिस देश में दूध घी

की नदियां बहतीं थीं आज वहां के युवा शराब के नशे में अन्धे होकर जवानी को नष्ट करने पर तुले हुए हैं और अगर वर्तमान समय की बात करें तो युवाओं में नशा केवल सिगरेट,गुटखा व शराब तक सीमित नहीं रहा है बल्कि कोकीन, हेरोईन,गांजा, चरस व नशीली दवाएं आदि का तेजी से शिकार हो रहा है। इन नशीले पदार्थों ने तो युवाओं की कमर तोड कर रख दी है। जिसमें पंजाब असम उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में बडी संख्या में लोग इनका सेवन करते हैं। जिसमें नशे के मामले में पंजाब बहुत संवेदनशील राज्य है। यहां पर 65 से 70 प्रतिशत युवा किसी न किसी नशे के आदि हैं। अगर सरकारी आंकडों की बात करें देश में 50 लाख लोग हेरोईन जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं।

तथा भारत में एक बहुत बडी आबादी इनका सेवन ही नहीं करती वरन इसकी आदी हो चुकी है। आए दिन नशीले पदार्थों की तस्करी करने वाले लोगों की खबरों से अखबार भरे पडे होते हैं । यह करोडों अरबों रूपयों का व्यापार प्रतिदिन प्रशासन की आंखों के नीचे से होता है।

विश्व स्वासथ्य संगठन की रिर्पोट के अनुसार दुनिया भर में 54 लाख लोग प्रतिवर्ष तम्बाकू से अपनी जान गंवा देते हैं । इसमें से 9 लाख मौत तो अकेले भारत में ही होती है। अगर प्र्रतिदिन का हिसाब लगाएं तो 2500 व्यक्ति तम्बाकू की वजह से काल के ग्रास में समा जाते हैं। यह अपने आप में बहुत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। इस तरह शराब नशीली दवाएं तथा तम्बाकू के कारण हजारों की तादाद में लोग मृत्यु के मुख में समा जाते हैं। और यह नशे का कारोबार अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा,सामाजिक सुरक्षा और विकास के लिए बहुत बडा खतरा है। इस नशे के कारोबार के साथ साथ आतंकवाद तथा आपराधिक गतिविधियों को बढावा मिलता है। और अपराध का ग्राफ इस प्रकार अपने आप बढ जाता है जो सरकार तथा प्रशासन के लिए एक बेहद गंभीर संकेत है। जिससे चारों तरफ लूटपाट, आगजनी,हत्याएं तथा चोरी की वारदातों को जन्म मिलता है। आज सरकार व पुलिस प्रशासन कानून व्यवस्था की स्थिति पर नियंत्रण का दावा करते हैं लेकिन आंकडे कुछ और ही कहते हैं। अगर अखबारों और न्यूज चैनलों का एक महीने का रिकॉड उठाया जाए तो आपराधिक गतिविधियां दुगनी ही मिलती हैं।

अतः सरकार को चाहिये कि जिस राष्ट्र की आधारशिला और उसकी ताकत ही कमजोर हो रही हो ऐसे राजस्व लाभ से मुनाफा कमाने से क्या लाभ?

युवा शक्ति को दिशाहीन होते देखकर देश के कर्णधारों को चिन्ता क्यों नहीं होती है ये देश के कर्णधार अपने बडे बडे भाषणों में जहां युवा को देश का भविष्य तथा वर्तमान बताते है और कहते हैं -

“ जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है।”

ऐसे नारों को लगाकर क्यों अपने पथ से विमुख हो जाते हैं । इससे तो ऐसा लगता है कि युवा शक्ति दिशाहीन नहीं हो रही है बल्कि युवा शक्ति को दिशा देने वालों ने अपना लक्ष्य

सत्ता सुख और धन को ही मान लिया है। ये दिशा देने वाले लोग ही अपने स्वार्थ के लिए अपने कर्तव्यों से विमुख हो गए हैं। सबसे कष्टदायी बात तो तब होती है जब ये लोग कई बार कहते हैं कि इस देश की स्थिति ही खराब है। तब ये भूल जाते हैं कि इस स्थिति को खराब करने वाले आप लोग ही हैं।

आज आवश्यकता यह है कि सरकारें महलों की दुनिया से बाहर निकलकर अपनी आंखों से अपने देश के लोगों की हालतों को निहारें। अगर देश का शासक ही नशे में फंसी नई पीढी के नजदीक जाकर उसकी दशा को नहीं समझेगा तथा नशा तस्करों को संरक्षण देगा तो हम कैसे कह पाएंगें कि भारत का वर्तमान और भविष्य सुरक्षित है ? और युवा पीढी नशे से कैसे मुक्त हो पाएगी । आज वर्तमान स्थिति को देखकर अगर हम नहीं जागे तो हम अपने ही बच्चों के भविष्य और वर्तमान को खराब कर लेंगें। और हम कैसे कह सकेंगें कि हम भारतीय लोग गौरवमयी संस्कृति के वाहक हैं जिसकी संस्कृति का डंका आज भी सम्पूर्ण विश्व में बजता है। अतः सरकार को चाहिये कि कडे से कडे नियम बनाकर नशा तस्करों पर कार्यवाही करनी चाहिये। तथा नशीली दवाएं, शराब,गुटखा, तम्बाकू आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाना चाहिये तथा कठोर नियम बनाने चाहियें। जिससे हम अपने वर्तमान व भविष्य दोनों को बचा सकें।

2.

इंसान से नाराज़ प्रकृति

समझ नहीं रहा मानव ,

प्रकृति करती इशारा ,

जनप्रतिनिधि होकर भी हमने नहीं विचारा ,

केबल स्वार्थ भावना से प्रकृति को है नोचा ,

इसकी सुंदरता का चीर हरण कर रखा ,

संसार में आत्मा, परमात्मा तथा प्रकृति ये तीनों अनादि हैँ, जो कभी भी नष्ट नहीं होती ! ये हमेशा थी, हैँ और रहेगी ! प्रकृति हमेशा से ही समस्त जीवों का लालन पालन करने वाली रही ! प्रकृति से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं से मनुष्य हमेशा से ही लाभान्वित होता है तथा अपनी जरूरतों को पूरा करता रहा है ! प्रकृति ने भी अपनी मनमोहक छटा से सभी को आकर्षित कर रखा है ! कहीं पर सुन्दर बगीचे, तो कहीं झरते हुए झरने कहीं रंग बिरंगे पक्षियों का झुण्ड तो कहीं पर मनमोहक पहाड़ तथा टीले हैँ ! समस्त प्राणियों को प्राणवायु तथा जीवन देने के लिए नाना प्रकार के औषधीय पौधे तथा वृक्षों के झुण्ड हैँ ! लेकिन आज आधुनिकता की दौड़ में अंधा हुआ मानव प्राकृतिक स्त्रोत का जाने अनजाने अत्यधिक दोहान कर रहा है! नदी, कुए तथा तालाब जो प्राणियों को अमृत रुपी जल दे कर स्वस्थ रखते थे आज उन्हें मनुष्य ने प्लास्टिक जैसी विषैली वस्तु तथा फैक्ट्रीयों के कैमिकल युक्त जल को डालकर गन्दा कर रखा है ! चारों तरफ आधुनिक बनने के चक्कर में लाखों पेड़ पौधों की कटाई हो रही है, जिससे धरती का तापमान बढ़ता ही जा रहा है और ग्लेशियर पिघल रहें हैं! आज ग्लोबल वार्मिंग का खतरा चारों तरफ मंडरा रहा है ! बहुत सारी जीव

जंतुओं की प्रजातियां समाप्त होने की कगार पर हैं यदि समय रहते हुए हम प्रकृति के दोहन को नहीं रोक पाए तो मानव अपने विनाश को आमंत्रित करेगा, इसमें कोई दो राय नहीं! इसका परिणाम इतना भयंकर होगा कि चारों तरफ हाहाकार तथा चीखें सुनाई देंगी!

आज की स्थिति बहुत भयानक है कि मनुष्य ने अपनी स्वार्थ भावना के कारण प्राकृतिक संसाधनों का जो विकृत रूप किया है वह मंजर सामने आने लगा है। आज ससांर में टेलीविजन तथा अखबारों पर प्राकृतिक आपदाओं से सम्बन्धित खबरें आती ही रहती हैं। कहीं पर बादल फटना, तो कहीं पर ग्लेश्यिर टूटने की, कहीं पर भूकम्प, कहीं पर बाढ जैसे मंजर तथा कहीं पर ज्वालामुखी फटने से लोगों की मौत की खबर आऐ दिन अखबारों में देखने को मिल जाती है। आज चारों तरफ विनाश की आहट शुरू हो गई है क्योंकि जो ठण्डे प्रदेश हैं उनमें भी तापमान बढ रहा है और ऐतिहासिक गर्मी दस्तख दे रही है। आज भारत में भी बढे -बढे शहरों का तापमान सौ-सौ सालों में, अब तक का सबसे अधिक तापमान अंकित किया जा रहा है। आज इंसान इतना गिर चुका है कि वह निरीह जानवरों का रक्त बहाकर दवाएं तथा वैक्सीन बना रहा है और स्वयं ही आज वायरस बनाकर लोगों को मौत के मुंह में धकेलने का जो प्रयास किया है आज वह सम्पूर्ण मानव जाति के लिए खतरा बन चुका है। आज स्वयं को सबसे शक्तिशाली और परमाणु बमों से सुसज्जित देश भी **अपने लोगों की रक्षा करने में सक्षम नहीं हो पा रहें हैं उनके बड़े से बड़े अस्त्र शस्त्र भी इस छोटे से वायरस के आगे धराशाही हो चुके हैं यह सब परिणाम मनुष्य की हठधर्मिता और कृतिम बुद्धिमता तथा भोग विलासिता के जीवन में मदमस्त दिमाग़ की उपज है जो आज सम्पूर्ण मानवजाति को विनाश की ओर धकेल रही है! इसका सीधा सा कारण पर्यावरण से छेड़छाड़ है !**

अगर मनुष्य इस विनाश की आहट से नहीं समझा तो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए विनाश का बीज बोने वाला होगा । जिसकी आहट अब मनुष्य ने पर्यावरण को नष्ट कर शुरू कर दी है। ऐसी कुछ घटनाएं जिन्होनें सम्पूर्ण मानवजाति को शोक तथा दुख की लहर में डाल दिया -

उत्तराखण्ड ग्लेशियर टूटना –

चीन की सीमा से छटे चमौली जिले के नीची घाटी सुमना में बर्फबारी के बाद ग्लेश्यिर टूटने की घटना हुई है जिसमें सरकार की तरफ से मिली जानकारी के अनुसार **384** लोगों को सुरक्षित निकाला गया तथा **8-10** शव बरामद हुए थे। और चमौली में ग्लेश्यिर टूटने की वजह से धौली गंगा नदी में बाढ आ गई थी जिसमें लगभग **54** शव बरामद हुए और सैकडों लोगों का आज तक पता नहीं चला है। अगर ग्लेश्यिरों के टूटने का कारण पता करें तो धरती पर बढता हुआ तापमान और प्रदूषण इसके जिम्मेदार हैं।

केदारनाथ त्रासदी

यह ऐसी भयानक त्रासदी थी इसमें जिन लोगों ने अपने परिजनों को खोया है उनके जख्म शायद ही कभी भर पाएं। **16** और **17** जून **2013** की यह घटना आज भी रोंगटें खडे कर देती है। घाटी के शान्त माहौल में एकदम भीषण कोलाहल ने सबको अचंभित कर

दिया । किसी ने सोचा भी नहीं था कि मन्दाकिनी नदी कभी इतना विकराल रूप धारण कर लेगी ।

जबरदस्त बारिश के कारण चौराबाडी ग्लेशियर पिघल गया था जिससे मन्दाकिनी नदी का जल स्तर इतना बढ गया कि एक भीषण तबाही में तब्दील होने में समय ही नहीं लगा। कुछ ही समय में विकराल रूप धारण किये हुए मन्दाकिनी नदी मे **उत्तराखंड** हिमाचलप्रदेश और पश्चिमी नेपाल का बढा हिस्सा अपनी चपेट में ले लिया! इस बीच में जो भी गांव रेस्त्रां होटलें धाणिंयां आईं वह सब मन्दाकिनी नदी में ही बह गए । यह खबर सुनते ही सुबह पूरा देश शोक की लहर में डूब गया। केदारनाथ यात्रा के लिए देश के अलग अलग राज्यों से आए हुए हजारों लोगों का कोई अता पता ही नहीं चला । इसके बाद मन्दाकिनी नदी का जल केदारनाथ मन्दिर तक आ गया फिर जो पूरे क्षेत्र में भीषण तबाही हुई उसके निशान आज भी केदारनाथ घाटी में नजर आते हैं। इस भीषण त्रासदी में हजारों की संख्या में लोग लापता हो गए और मारे जाने वाले लोगों का आंकडा अब तक भी साफ नहीं हुआ है।

आज भी केदारनाथ घाटी में खुदाई का कार्य होने पर नरकंकाल मिलते रहते हैं। इस भीषण आपदा में फंसे लोगों को बचाने के लिए सरकार ने सेना को तुरन्त भेजा और सेना के जवानों ने लाखों लोगों को बचाया और उन्हें सुरक्षित जगह पर निकाल कर लाए। लेकिन आंठवी सदी में बने हुए केदारनाथ मन्दिर को इस भीषण तबाही से नुकसान नहीं हुआ। यह लोगों के लिए एक अचरज का विषय बन गया लेकिन कुछ शोध संस्थानों नें केदारनाथ मन्दिर के पीछे यह कारण दिया कि मन्दिर की भौगोलिक स्थिति तथा बनावट ही इसका

महत्वपूर्ण कारण रही।

इस भीषण तबाही के बारें में जानकर लोगों के रोंगटें खडें हो जाते हैं।

कोरोना काल

प्रकृति से जब जब खिलवाड हुआ है तब तब प्रकृति ने मनुष्य को सचेत किया है। आज एक छोटे से वायरस ने संसार के लोगों को जो नाच नचाया है वह अपने आप में उनके लिए एक सबक है। आज प्रत्येक देश अपने परमाणु हथियारों की ताकत के बल पर एक दूसरे देश को धमकाने पर लगा हुआ है। उस समय पूरे विश्व में एक देश भी ऐसा नहीं था जो एक छोटे से वायरस का सामना कर सके और अपने लोगों को मौत के मुंह में जाने से रोक सके। चारों तरफ लाशों पर लाशें बिछने लगीं थीं । हर तरफ तबाही का मंजर तथा इंसानों की चीखें सुनाई दे रहीं थीं। किसी ने कहा है -

बोया पेड बबूल का आम कहां से पाय

इसका तात्पर्य यह है कि हमने जैसा प्रकृति को दिया है वैसा ही प्रकृति ने हमको वापिस दे दिया । अगर आज सही अर्थों में कहें तो मनुष्य ने जो प्रकृति को तबाह व नष्ट किया है उसी

का परिणाम है कि आज मानव मानव से दूर भाग रहा है। वह इस विप्ना में अपने परिजनों के साथ भी नहीं रहना चाहता। किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि यह भयानक दृश्य हमें अपने जीवन काल में देखना पडेगा पर यह एक कटु सच्चाई है जिसका सामना हमें न चाहते हुए भी करना पड रहा है। वे बडे बडे देश जो अपने अत्याधुनिक अस्पतालों तथा बेहतरीन सामाजिक सुरक्षा पर इतराते थे आज वह ही देश कोरोना की पीडा में सबसे ज्यादा लाचार और त्रस्त दिखाई दे रहें हैं । इन बडे बडे देशों को कारोना की पीडा ने घुटनों के बल पर ला दिया और इन देशों ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और उन्होनें अपने नागरिकों को चेतावनी दे दी कि कोरोना की पीडा कितने हजारों और लाखों लोगों को अपना ग्रास बनाएगी। इस पूरे विश्व में मनुष्य जहां प्रकृति को नोंच नोंच कर खा रहा था तथा जीव जन्तुएं मनुष्य के आगे भयभीत दिखाई देते थे। आज वे ही जीव जन्तुएं खुले आसमान के नीचे सुख शान्ति से अपना जीवन जी रहें हैं और यह निर्दयी इंसान आज बन्द मकानों के अन्दर घुट घुट कर जीवन जीने को विवश है। इस निर्दयी इंसान ने पर्यावरण नदियों और तालाबों तथा वायु को जो दूषित किया था वह आज घरों में बन्द होने के कारण नदियों का जल स्वच्छ तथा वायु प्रदूषण भी कम हुआ है। जब से लॉक डाउन हुआ है तब से केवल इंसान को छोडकर समस्त प्रकृति पशु पक्षी अत्यन्त प्रसन्न व सुखी हैं। आज नीले आसमान में स्वच्छन्द विचरण करते हुए तथा नदियों का शीशे की तरह चमकता हुआ जल तथा वायु प्रदूषण का घटता हुआ ग्राफ आग उबलते और शोर करते हुए बन्द पडे हुए वाहन इस बात की ओर संकेत करते हैं कि इंसान ने किस तरह प्रकृति का शोषण तथा उसका चीर हरण किया है। ऐसा लगता है कि मानो जो नुकसान इंसान प्रकृति को पंहुचाता आया है उसकी भरपाई हो रही है। अतः इस विकट परिस्थिति में कोरोना मनुष्य जाति को जागृत करने आया है कि हे इंसान अगर तू अब भी नहीं बदला तो आगे सुधरने का कभी समय ही नहीं मिलेगा।

अब यही समय है कि मनुष्य को अपनी मनुष्यता सिद्ध करने का ! उसे प्रकृति के उपहारों को नहीं भूलना चाहिए तथा ये हमेशा याद रखना चाहिए कि प्रकृति सर्वाधिक बलशाली है ! हम सब अपनी कितनी ही आधुनिक शक्तियों के बल पर आगे बढ़ जाएं किन्तु हमें ईश्वर की सर्व शक्तिमान सत्ता का आभास करवाती है ! कोरोना के समय का मानव को यह सन्देश है कि किसी भी ताकत के बल पर

मनुष्य स्वयं को इतना ताक़तवर ना समझें कि वह अन्याय करके न्याय प्राप्त कर सकता है ! इस समय का यह सन्देश है कि न्याय करो, मानवता का त्याग मत करो!

यही समय है कुछ तो तनिक विचार करो ,

अपने को मानव कहने का कुछ तो शर्म लिहाज करो ,

नहीं समझें संकेत अगर तुम,

प्रकृति अपना रूद्र रूप दिखाई,

लाशों का अम्बार लगा होगा,

प्रकृति जश्न मनाएगी!

3.

समाज को बीमारियों की तरफ धकेलता मानव

आज संसार में चारों तरफ नज़र घुमा कर देखते हैं कि 60 से 70 प्रतिशत लोग बीमारियों से घिरे हुए हैं ! आज लोगों की दिनचर्या में गोलियां लेना तो अनिवार्य सा हो गया है ! राष्ट्र में स्वास्थ्य की दृष्टि से मज़बूत कहा जाने वाला युवा भी आज बीमारियों की तरफ धीरे धीरे अग्रसर होता जा रहा है ! वर्तमान की स्थिति को देखते हुये मन भयभीत होता है! जिस तरह आज छोटे छोटे बच्चों को बीमारियों ने ग्रस्त कर रखा है ये बीमारियां प्राचीन समय में 60 से 70 वर्ष की उम्र में होतीं थीं !

अगर आज हम इन बीमारियों के कारण को जानना चाहें तो मनुष्य स्वयं ही इसका जिम्मेदार है !

क्योंकि आज हम लोगों ने घर के शुद्ध भोजन को नकार कर होटल तथा रेस्टोरेन्ट के भोजन को वरीयता देते हैं। और सबसे अधिक लोग फास्ट फूड/ जंक फूड का सेवन कर रहे हैं। जो शरीर में जाकर ना तो उर्जा देता है तथा पचने के स्थान पर शरीर में सडता है।

ये सारे जंक फूड मैदा तथा बार-बार उपयोग किये गए तेल से बनते हैं जो जहर के समान है। जिसका नतीजा ये निकलता है कि इसका सीधा असर हमारे सेहत पर पडता है आज बाजारों में दूध,दही ,सब्जी तथा अन्य खाने की वस्तुएं भी शुद्ध नहीं मिल पाती हैं। आज सभी खाने के पदार्थों में बाजारों में मिलावट का दौर जारी है। जो कि केमिकलों से तैयार किया गया जहर है। जो हमारे शरीर में जाकर अनेकों बीमारियों की तरफ अग्रसर करता है। आज अधिक पैदावार के चक्कर में लोग अपने ही लोगों के सेहत से खिलवाड कर रहें हैं। नतीजा यह निकल रहा है कि आज मनुष्य भयानक बीमारियों से ग्रसित होता जा रहा है जिनसे बचना भी संभव नहीं है। अगर हमें अपने शरीर को बीमारियों से बचाना है तो हमें स्वयं ही यह परहेज करना होगा कि कौन सी चीज हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और कौनसी फायदेमन्द । आज बाजारों में खुली खाद्य सामग्री पर धूल मिटटी के कण तथा मक्खियां बैठ जातीं हैं जिसके कारण मक्खियां खाद्य सामग्री के उपर अपना लार्वा छोड देतीं हैं और इन खाद्य सामग्रियों को जब हम खाते हैं तो हमारे शरीर में संक्रमण तथा पेट से सम्बन्धित कई अन्दरूनी बीमारियां हो जाती हैं। जिससे शरीर में गैस,अपच,अतिसार तथा एसीडिटी जैसी बीमारियां जन्म लें लेतीं हैं। आज अगर डॉक्टरों की मानें तो 60 प्रतिशत बीमारियां दूषित भोजन खाने से होतीं हैं।

आज समाज में बीमारियां बढने के कुछ कारण

रासायनिक युक्त कृषि-

आज से 60-70 साल पहले लोग कृषि में जैविक खादों तथा घरेलू निर्मित दवार्दयों का प्रयोग करते थे जिससे बने भोजन के प्रयोग से मनुष्य के शरीर कोई दुष्प्रभाव नहीं पडता था। लोग अपने घरों में खेती के लिए गाय ,भैस,बैल आदि पशु पालते थे। जिसके दूध से घरों में मिठाईयां दही,घी,छाछ आदि बनते थे और इन पालतू पशुओं का गोबर व मूत्र खाद में काम में लिया जाता था तथा केंचुएं की सहायता से जैविक खाद तैयार की जाती थी! जिससे उन्नत फसल मिलती थी जो स्वास्थ्य के लिए लाभकर तथा पुष्टिकारक होती थी!जैसे -जैसे जनसंख्या बढने लगी वैसे- वैसे खाद्य आपूर्ति पर संकट गहराने लगा। और धीरे- धीरे अधिक खाद्यान्न की प्राप्ति के लिए रासायनिक खाद और पेस्टिसाइड का उपयोग किया जाने लगा! लेकिन उसके दुष्परिणामों का समय रहते गौर नहीं किया गया । जैसे जैसे समय बढता गया आने वाले 10--20 सालों में ही इसका बुरा असर सामने आने लगा। लोगों ने पैदावार पर जो संकट आया था! उसका समाधान ज्यादा से ज्यादा रासायनिक खाद ही समझ लिया । इन रासायनिक खादों का अधिक इस्तेमाल होने लगा

उसका परिणाम यह निकला कि आज मिटटी में उर्वरता शक्ति का ह्रास और पर्यावरण को बहुत नुकसान हुआ। रासायनिक खाद जमीन के माइक्रो आर्गेनिक को भी खत्म करता है और जो केंचुएं जमीन में ही पनपते थे आजकल ये खत्म हो गएं हैं। आज रासायनिक खादों में डी ए पी यूरिया में यूरेनियम की मात्रा होती है। यह यूरेनियम की मात्रा कोयले की तुलना में डी ए पी में 10 गुना होती है तथा इसके साथ साथ कोबाल्ट निकिल की मात्रा भी पाई जाती है। जब रासायनिक खादों के उपयोग से फसलें तैयार की जातीं है तो इसका असर खाने वाले अन्न में भी आ जाता है। आज हम लोग अन्न की जगह यूरिया ही खा रहें हैं जिसका हमारे शरीर पर दुष्प्रभाव पडता है तथा अनेक असाध्य बीमारियां जैसे कैंसर आदि बढती ही जा रहीं हैं। आज हैरानी की बात यह है कि पंजाब से एक ट्रेन चलकर राजस्थान में बीकानेर तक आती है उसमें अधिकतर यात्री कैंसर से ग्रसित होते हैं और आज उस ट्रेन को लोग कैंसर ट्रेन के नाम से जानते हैं यह हमारे सामने बहुत बड़ा कडवा सच है। आज हमने रसायन खादों से पैदावार तो बढा ली है लेकिन खाद्य सामग्रियों की पोषण क्षमता कम हो गई है! जिसके कारण व्यक्ति कुपोषण का शिकार हो रहे हैं । आज अधिक पैदावार लेने के चक्कर में लोग देसी चीजों को छोडकर नए नए हाई ब्रीड बीजों से खेती करते हैं जिससे खाद्यान्न तो बढा ही है लेकिन मानव शरीर में कोलेस्ट्रोल की मात्रा भी लगाातार बढी है। जबकि कॉपर की मात्रा 70 प्रतिशत तक गिर गई है। जबकि देशी खाद्यान्न में कॉपर की मात्रा सबसे अधिक होती है जो मानव शरीर को पोषक तत्व प्रदान करती है। अब कीटनाशकों की बात करें तो उन्होनें पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर बहुत अधिक गहरा असर डाला है। क्योंकि यह कीटनाशक 99 प्रतिशत तक मिटटी में तथा पर्यावरण में मिल जाते हैं।

आज मनुष्य भंयकर बीमारियों को झेल रहा है केवल और केवल पैदावार बढाने के चक्कर में । आज जब दुनिया ग्रीन हाउस गैस समेत तमाम बीमारियों से जूझ रही है तो क्यों न हमें इस रसायनिक खादों और कीटनाशकों के प्रयोग को बन्द कर देना चाहिये । लेकिन हमारी सरकारें भी रासायनिक खादों पर सब्सिडियां देतीं हैं जबकि ऑर्गेनिक खेती पर सब्सिडी नहीं देतीं है। आज हमें जैविक खेती के साथ साथ देसी गाय बैल और पालतू जानवरों की नस्लों को बचाने की बहुत आवश्यकता है क्योंकि देसी गाय के गोबर और मूत्र में 50 फीसदी तत्व ज्यादा मिलते हैं । अगर मनुष्य को पर्यावरण और अपने लोगों को स्वस्थ रखना है तो जैविक खेती की ओर लौटना ही पडेगा तथा सरकार को चाहिये कि जैविक खाद देसी उन्नत बीजें किसानों को मुहैया करवाए। और रासायनिक खादों व कीटनाशकों

के दुष्परिणामों को समझाए। जिससे हम पर्यावरण तथा मनुष्य जाति को अनेक बीमारियों से बचा सकते हैं।

2 असंतुलित भोजन तथा सही दिनचर्या का न होना -

आज भागती दौडती जिन्दगी में लोगों को पता ही नहीं है कि क्या खाना है क्या नहीं खाना है। आज लोगों को सही मात्रा में प्रोटीन,खनिज,लवण तथा विटामिन नहीं मिल पाते हैं क्योंकि उनको अपने आहार - विहार का कोई ज्ञान नहीं है। आज मनुष्य को केवल पेट भरने से ही मतलब है। उसे जैसा भी ठण्डा गरम भोजन तथा पेय पदार्थ मिले सबको एक साथ खा पी जाता है। जिससे शरीर में पेट सम्बन्धी बीमारियां उत्पन्न होतीं हैं। और शास्त्रों में भी कहा गया है जिन पदार्थों से चिकनाई निकाली गई हो उनका सेवन करना ठीक नहीं है और दिन में कई बार पेट भरकर या बहुत सवेरे तथा बहुत शाम हो जाने पर भोजन नहीं करना चाहिये। भोजन का भी एक नियत समय है!कब और कितना करना चाहिये? आज स्थिति यह है कि ना तो हमारे बच्चों को शुद्ध दूध व फल सब्जी,ना ही चिकनाई वाले

पदार्थ शुद्ध घी, तेल मिल पाते हैं क्योंकि आज जिस पदार्थ की जितनी खपत है उतना प्रकृति तथा जीव जन्तुओं से नहीं मिल पाता है। इसके लिए लोगों ने कृत्रिम तरीके से दूध बनाना तथा फल सब्जियों को समय से पहले तैयार करने के लिए इंजेक्शनों का उपयोग करना इत्यादि तरीकों को प्रयोग करना शुरू कर दिया है जिससे इन जहरीले पदार्थों से ना तो व्यक्ति को उर्जा मिल पाती है और ना ही वह स्वस्थ रह पाता है। भारत जैसे विकासशील देशों में जहां प्राचीन समय में दूध की नदियां बहतीं थीं आज सरकार की मूर्खतापूर्ण नीतियों के कारण पालतू जानवर गाय भैंस आदि को काटा जा रहा है। ना तो जिससे शुद्ध दूध की पूर्ति हो पाती है ।

आज भारत में लाखों बच्चे संतुलित भोजन न करने के कारण कुपोषण के शिकार हैं और कुपोषण के कारण बच्चों की रोगों से लडने की शक्ति भी कम हो जाती है और दिनचर्या की बात करें तो लोग इस आधुनिक जीवन में शरीर से कोई मेंहनत करना ही नहीं

चाहते!जिससे ना तो शरीर से पसीना निकल पाता है ना ही शरीर की वर्जिश हो पाती है। आजकल एक नया तरीका और चल गया है कि लोग बच्चों को धूल मिटटी में खेलने ही नहीं देते! जिससे उनके शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति भी नहीं बढ पाती है। अतः मानव को चाहिये कि अपने स्वास्थ्य के लिए सजग रहे तथा जो शरीर को पोषक तत्व देने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन करे और संतुलित भोजन और अपनी दिनचर्या में व्यायाम दौड तथा टहलने आदि को शामिल करे।

आज हम सबका दायित्व है कि सर्वप्रथम प्राथमिकता अपने स्वास्थ्य को दें ! कहते हैं स्वास्थ्य से अधिक कोई पूंजी नहीं ! यही सत्य हैं हम अपने प्रत्येक कार्य एवं कर्तव्य की पूर्ति बिना स्वास्थ्य के नहीं कर सकते!अतः यह जागरूकता देश के हित में है अपने नहीं !इसके लिए युवा वर्ग को आगे आकर समाज को स्वस्थ रूप देने का प्रयास करना चाहिए ! हम जैसे चाहे जीवन जीने की प्रथा को छोड़कर यदि स्वस्थ रहने और रखने के भाव को पुष्ट करें तो निश्चित रूप से हर एक कार्य को कुशलता से पूरा कर पाएंगे अन्यथा एक अस्वस्थ शरीर ना तो स्वयं अपने लिए कुछ बेहतर कर सकता है ना ही किसी और के लिए !

यदि हम रसायनों का प्रयोग करके अधिक धन कमाना भी चाहें तो ऐसे धन से क्या लाभ जो स्वास्थ्य की ही हानि करे!

जीवन के प्रति सभी के कर्तव्य होते हैं यदि हम देश को,समाज को,परिवार को बीमारियों से मुक्त रखना चाहते हैं तो वैसी ही दिनचर्या में खुद को ढालना होगा ! असंतुलित जीवन शैली

के दुष्कर परिणाम होते हैं ! हमारी सफलता भी इसी पर निर्भर करती है ! सफलता केवल भागती दौड़ती जिंदगी से ही प्राप्त नहीं होतीं बल्कि नियमित जीवन शैली से प्राप्त होतीं है !

यदि अधिक उपज के लिए रासायनिक खाद व कीट नाश्को की बजाय पूर्वजों के नियत घरेलू दवाइयों का प्रयोग किया जाए तो हमारे शरीर में जाने वाला अन्न हमें स्वास्थ्य की दौलत दें सकता है और हमारे जीवन को निरोगी बना सकता है!

4.

इंसान का विकराल रूप

बनना था इंसान हमको

हैवान बनकर रह गए ।

करने थे नेक काम हमको

हैवानियत पर उतर गए।।

जब मानव का मानवता से नाता ना रहा हो तो वह मानव कैसा ! वह इंसान नहीं शैतान होता है। आज जंहा भी देखो चारों तरफ इंसानियत दम तोड रही है हाहाकार की चीखें सुनाई दे रहीं हैं। मानवता तो कहने मात्र को ही रह गई है। सीधे शब्दों में कहें तो आज मनुष्य ने मानवता के गले में फांसी का फन्दा लटका रखा है। आज खूंखार बना इंसान कब अपनों को निगल जाए पता ही नहीं चलता है। आज ये मतलबी इंसान अपना मुखौटा तथा स्वभाव इस तरह बदलता है जैसे गिरगिट भी इतनी जल्दी रंग नहीं बदलता ।

जंहा इंसान का स्वार्थ पूरा हो रहा हो वहां अपना चेहरा बदलने में देर ही नहीं लगाता । केवल इंसानियत और मानवता तो किताबों तथा उपदेशों में ही शेष रह गई है। आज जहरीले जानवरों की भांति इंसान ही इंसान को निगलने पर लगा हुआ है। आज संसार में कहीं भी घटना घटित होती है तो इंसान का दोहरा चरित्र सामने आ जाता है। आज इंसान की स्थिति ऐसी हो गई कि दिखने मे तो बहुत सादा तथा अन्दर से कब जहर उगल दे इसका पता ही नहीं चलता । आज हम मानवता को शर्मसार करने वाली तथा इंसान के अन्दर पल रहे शैतान के रूप में कुछ घटनाओं पर चर्चा करेंगें जो कि मानवता के मुंह पर कालिख पोत चुकी हैं।

जब हम इन घटनाओं को अखबारों न्यूज चैनलों तथा दूसरे व्यक्ति के मुख से सुनते हैं तो उस इंसान के अन्दर की आत्मा भी कांप उठती है। मानो आज हम ऐसे समाज में रह रहें हैं जहां पर मानव के भेष में भेडिया कब शिकार कर ले पता ही नहीं चलता।

केदारनाथ त्रासदी के कुछ डरावने पल

एक तरफ तो पूरा देश केदारनाथ त्रासदी के मंजर को देखकर व्यथित तथा दुखी था और परिवार के लोग अपने परिजनों के आने के विषय में कुछ समाचार मिल जाए आंखों में टकटकी लगाकर बैठे हुए थे। इस महाविनाशक त्रासदी में परिजन घर आएंगे या नहीं किसी को क्या पता था। चारों तरफ हाहाकार तथा चीखें सुनाईं दे रहीं थीं और मानवता के रक्षक और सेना के जवान लोगों को बचाने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे। इस भीषण आपदा में फंसे हुए लोगों को खाना पानी उपलब्ध करवा रहे थे। लेकिन दूसरी तरफ इंसान के रूप में बैठे हुए गिद्ध भी लाशों पर पैनी दृष्टि जमाए हुए थे। उनको तो केवल इस महाविनाशक त्रासदी में मांस की बोटी ही नजर आ रहीं थी। कुछ दरिन्दे पानी की बोतलों को और खाने की सामग्री को दुगने दाम में बेच रहे थे। और हद तो तब पार हो गई जब न्यूज चैनलों पर आने लगा कि इंसान के रूप में दरिन्दे लाशों की उंगलियों को काटकर सोने चांदी की अंगूठियों को उतार रहे थे। इस भयानक मंजर में भी दरिन्दे अपनी ओछी हरकतों से बाज नहीं आ रहे थे। जहां एक तरफ पूरा देश इस भयानक त्रासदी से भयभीत

तथा घबराया हुआ था और अपने परिवारजनों के बिछोह को सहन नही कर पा रहा था वहीं दूसरी तरफ ये गिद्ध इन लाशों में भी अपनी कमाई का साधन ढूंढ रहे थे। ऐसे लोग ही खूंखार जानवरों से भी ज्यादा खतरनाक तथा इंसान के भेष में छुपे हुए भेडिये हैं। इनसे सावधान रहना मनुष्य के लिए बहुत जरूरी है।

इंसान का पशुओं से निर्मम व्यवहार

आज इंसान के शैतानी दिमाग ने पशुओं को भी नहीं छोडा है। जो जीव जन्तुएं पर्यावरण का संतुलन बनाए रखते हैं तथा मानव के लिए हर तरह से उपयोगी होते हैं। जो कभी भी बिना सताए किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। ऐसे निसहाय जानवरों को अपने स्वाद के लिए खाना कहां का न्याय है ? आज इंसान शमशान में जाकर लाश को छूता है तो घर पर आकर के नहाता है। लेकिन जब वह जीवित जीव जन्तुओं को मारकर खाता है तब वह भूल जाता है कि उसने जीभ के स्वाद के कारण अपने ही पेट को कब्रिस्तान बना लिया है। आज लाखों मुर्गा,   बकरा,   भैंसा आदि जानवरों की जीभ के स्वाद के कारण

रोज हत्या की जाती है। जैसे इन निसहाय पशुओं पर छुरी चलाते हुए निर्दयी इंसान का दिल नहीं पसीजता ।

<u>केरल में हथिनी हत्याकाण्ड</u>

कुछ महीनों पहले केरल में गर्भवती हथिनी को फलों में रखे हुए पटाखे खिलाने का मामला सामने आया ! जिसमें तीनों आरोपियों को गिरफतार कर लिया गया है ! पटाखों के धमाके से हथिनी के मुंह में घाव हो गए । जिससे कुछ न खा पीने के कारण हथिनी की मौत हो गई । यह मामला सोशल मीडिया पर इतना फैला कि सरकार ने आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की । राज्य सरकार की ओर से एक कमेटी की गठित की गई । इस घटना ने लोगों के मन में आक्रोश की लहर पैदा कर दी, जिसका परिणाम यह रहा कि केन्द्र सरकार ने दोषियों को न छोडने का एलान कर दिया । पोस्टमार्टम की रिर्पोट में सामने आया कि मौत बहुत दर्दनाक थी । हथिनी के मुंह में विस्फोट होने से जबडे

क्षतिग्रस्त हो गए थे तथा मौत के पहले उसने 14 दिन तक कुछ नहीं खाया I वहाँ के लोगों बताया कि घायल होने और तकलीफ में होने के बाद भी उसने किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया,   ना ही किसी को कुचला। भूख प्यास से परेशान हथिनी ने गांव के कई चक्कर लगाए थे। उसके बाद वह पानी के अन्दर चली गई I

अलवर में पशु क्रूरता

अलवर जिले के रैणी क्षेत्र में चार लोगों पर पशु क्रूरता का मामला दर्ज किया गया है ! कुछ दरिंदो तथा वहशीपन के शिकार लोगों ने अपने पड़ोसी के पालतू कुत्ते के तीन पैरों को कुल्हाड़ी से काट डाला ! उन्हें शक था कि पड़ोसी के खेत पर रहने वाला कुत्ता उनके बकरी के बच्चे को उठा लें गया था ! ये दरिंदे उस पालतू कुत्ते को जबरन उठा कर ले गए और धार दार हथियार से तीन पैर काट डाले ! जिसके कारण कुत्ता दो घंटे तक तड़पता रहा और काफ़ी खून बहने के कारण दम तोड़ दिया ! पोस्टमार्टम रिपोर्ट में अत्यधिक खून बहने और धार दार हथियार से वार करने का मामला सामने आया ! जिस प्रकार यह इंसान निरीह जानवरों पर अत्याचार करने पर तुला है, यह कभी इंसान हो ही नहीं सकता ! इंसान के भेष में शैतान है !

ऐसी डरावनी तथा अमानवीय घटनाओं को देख कर साधारण आदमी का दिल दहलने लगता है !

दरिंदगी की सारी हदें पार करता इंसान

आज इंसान को इंसान कहने में शर्म आती है क्योंकि इंसानियत की सारी हदें पार करके पशुओं पर जो भी अत्याचार करता है, वह भी असहनीय हैं ! आज सुबह ज़ब उठते ही अख़बार खोल कर देखते हैं तो ऐसी घटनाओं को पढ़कर दिल दहल उठता है कि छोटी छोटी बच्चियों के साथ गैंग रैप तथाअमानवीय कृत घिनौना कर्म करते हुए भी उन्हें शर्म महसूस नहीं होती है ! आज इंसान हैवानियत की सारी हदें पार कर चुका है ! आज इस का घिनौना चेहरा देख कर के शर्म आती है !

5.

महिला उत्पीड़न

ईंट पत्थरों से बने मकान को घर बनाने वाली महिला जो माँ, बहन, पत्नि, बेटी इन रूपो में एक जीवंत प्रतिमा होती है धैर्य, विश्वास, शक्ति और ममता की ! हर पुस्तक के ज्ञान से बड़ी उनकी अनुभव की पाठशाला, घर की हर मुश्किल को चुटकियों में सुलझा लेने की काबिलियत रखती है!

वो महिला जो बाहर से मुस्कुराते हुए सुबह से शाम अपने कर्तव्यों को पूरा कर रही होती हैं कहाँ -कहाँ उत्पीड़न नहीं होता उसका ? कहाँ – कहाँ शोषण नहीं होता ? कदम – कदम पर उसकी इच्छाओ का शोषण होता है ! उसकी इच्छाएं मानों अन्य सभी के रहमों -कर्म पर टिकी हों ! ये पारिवारिक उत्पीड़न, जो इतनी शांति से होता है, जिसकी गूँज केवल उस बेटी, बहन, माँ या पत्नि के भीतर ही सुनाई देती है, जिसके साथ अपने ही घर में अनेकों प्रकारों से उत्पीड़न किया जाता है !

पिता अपने मान के लिए, भाई अपनी शान के लिए, सामाजिकता के नाम पर कितनी ही शर्तों को, बखूबी पूरी करवाते हैं, मानों कि दबने, सहने, झुकने की किस्मत तो पत्थर की लकीरों से लिखवा कर आयी हों वो अपने घर में ! ये होता है पारिवारिक शोषण, जिसके बारे में किसी को कानों कान खबर नहीं होती ! माँ, बहन, बेटी, पत्नि किसी भी रूप में बाहर से तो वो हमेशा मुस्कुराती जो रहती है !

आज बात कर रहें हैं महिला उत्पीड़न विषय पर ! तो सबसे पहले शुरुआत तो यहीं से होनी चाहिए कि परिवार में उत्पीड़ित महिला, फिर और हर जगह शोषित ही होती चली जाती है ! आगे चलकर सामाजिक उत्पीड़न और यौन उत्पीड़न का शिकार बन जाती हैं !

देश शर्मसार हो जाता है किन्तु मानव नहीं – जो निर्माता होती है उसी के आंचल को तार -तार करते कौरवों के हाथ कहाँ – कहाँ घात लगाए नहीं बैठे है ?

कहते हैं देवताओं को भी जन्म माँ ने ही दिया है, देश को महापुरुष देने वाली भी माँ ही होती है ! इस तरह एक महिला परिवार नहीं वरन देश की निर्मात्री होती है ! जिसने बनाया हम उसी को मिटाने चले ! जो मर्यादा सिखाती है, उसी को दागदार बनाकर कौनसी वीरता का परिचय देता है पुरुष समाज ? ये तो पृथ्वी पर सबसे निम्नस्तरीय अपराध है ! सम्भवतः इससे घृणित कोई अपराध नहीं !

बलात्कार - यह ऐसी घटना है जो आज अखबारों में रोज़ पढ़ने को मिलती है ! समाज में रह रहे कुछ दरिंदे और नपुंसक लोगों के कारण सामाजिक मर्यादाओ को तार तार करते रहते हैं ! ऐसे लोग मानसिक रूप से विक्षिप्त, मानवता के दुश्मन हैं !

यौन उत्पीड़न – आज महिलाएं कार्य स्थलों, ऑफिस और सार्वजनिक जगहों पर अभद्रता तथा छेड़ छाड़ जैसे गंभीर अपराधों को करते हुए लोगों को शर्म महसूस नहीं होती हैं ! ऐसी नींच प्रवति के लोग बेबस और लाचार महिलाओं से अपनी वासनाओं की पूर्ति के लिए ऐसे निम्न नीय दुष्कर्मो का सहारा लेते हैं ! ऐसे लोग समाज में गंदगी फैलाने वाले तथा नींच परवर्ती के होते हैं !

शारीरिक और मानसिक प्रताड़नाए – आज समाज में महिलाओं का सबसे अधिक शोषण मानसिक प्रताडनाओ से होता है ! ये लोग छोटी छोटी बातों पर, अपनी बात मनवाने के लिए शारीरिक और मानसिक प्रताडनाये देने से पीछे नहीं हटते हैं ! ये लोग समाज में मानवता के दुश्मन ही नहीं अपितु मानवता के हत्यारे भी हैं ! आज हम लोग देखते हैं किस तरह समाज में दहेज़ के लोभी महिलाओं को प्रताड़ित तथा जगह जगह पर उसका शोषण करते हैं ! कई बार तो स्थिति इतनी भयानक होती है कि इंसान के भेष में राक्षसी प्रवर्ती के लोग महिलाओं को जलाकर मार देतें हैं ! अतः **विचारणीय यह है कि क्या हमारा समाज महिलाओं के लिए एक असुरक्षित और अपमानजनक जीवन जीने का स्थान बन**

गया है? हम इंतजार करेंगे कि कोई विशाखा, भंवरी देवी या निर्भया आए और उनके अस्तित्व दांव पर लगने के बाद सरकार और समाज जागेगा? अब हमारे पास महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध एवं प्रतितोषण) कानून 2013 मौजूद है।

भारत में विधि द्वारा महिलाओं के विरुद्ध अपराधों एवं उनसे सम्बंधित प्रावधानों से हम सभी का परिचित होना आवश्यक है, जिससे कभी भी अपने समक्ष यदि हम महिलाओं के विरुद्ध उक्त में से कोई अपराध कारित होते देखें तो उसकी सुरक्षा हेतु कदम उठा सकें !

स्त्री की लज्जा हेतु भारतीय दंड संहिता के अन्य प्रावधान

धारा 354 में स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से उस पर हमला आपराधिक बल का प्रयोग के विषय में वर्णित है कि जो कोई किसी स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से यह संभव जानते हुए कि ऐसा कार्य करते हुए वह उसकी लज्जा भंग करेगा। उस स्त्री पर हमला करेगा वह दोनों में से किसी भांति के कारावास से जिसकी अवधि 2 वर्ष तक की हो सकेगी या जुर्माने से या दोनों से दंडित किया जाएगा।

इस धारा का लक्ष्य स्त्री के अस्तित्व की रक्षा करना है तथा उसके आत्मसम्मान और उसकी अस्मिता की रक्षा करना है।

आईएपीसी धारा 376, बलात्कार

इस अपराध को भारतीय दंड संहिता में बलात्संग भी कहा गया है। यह अत्यंत जघन्य अपराध है। यह अपराध भारत की प्रमुख समस्या बनकर उभरा है। भारतीय दंड संहिता में इस अपराध मे मृत्युदंड तक दंडनीय रखा गया है।

दहेज संबंधी अपराध

आईपीसी 304 बी

दहेज की मांग न पूरी होने पर वधू की हत्या की घटनाएं निरंतर बढ़ती जा रही हैं। ऐसा विधायिका के संज्ञान में आया। खाना बनाते समय चूल्हे की आग वधु को काल कवलित करती है, ऐसा अधिकतर देखा जाता है। वर पक्ष का कोई भी शायद ही कभी

जलकर मरता हो। इस समस्या से प्रभावी ढंग से निपटने हेतु भारतीय दंड संहिता में दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1986 बनने के बाद धारा 304 बी 'दहेज मृत्यु' के नवीन अपराध को जोड़ा गया है।

वास्तव में इस संशोधन से पूर्व दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 को दहेज की कुरीति पर नियंत्रण बनाने हेतु अधिनियमित किया गया था, परंतु दहेज की मांग मृत्यु का कारण बनने लगी इसी कुरीति पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से भारतीय दंड संहिता की धारा 304 बी तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 113 बी जोड़ी गई। यह आजीवन कारावास तक से दंडनीय अपराध है।

आईपीसी धारा 498 ए

इस धारा के अंतर्गत पति और उसके नातेदार द्वारा स्त्री के प्रति क्रूरता को रखा गया है। इस क्रूरता में मानसिक एवं शारीरिक दोनों तरह की क्रूरता को स्थान दिया गया है। यदि पति उसके नातेदार स्त्री के विरुद्ध मानसिक एवं शारीरिक क्रूरता करते हैं तो इस धारा के अंतर्गत दंडनीय अपराध है। यह एक संज्ञेय अपराध है और गैर जमानती भी है।

घरेलू हिंसा अधिनियम एवं महिलाएं

घरेलू हिंसा से महिलाओं के संरक्षण हेतु 2005 में भारतीय संसद द्वारा घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 बनाया गया। इस अधिनियम का उद्देश्य महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू हिंसा को समाप्त करना था। इस अधिनियम के अंतर्गत पति द्वारा घर से निकाली गई महिला को घर में प्रवेश दिलाने का अधिकार भी दिया गया है या तलाकशुदा महिला को भरण पोषण उसकी संतान को भरण पोषण दिए जाने का अधिकार भी दिया गया है।

यह महिलाओं के लिए बनाया गया अत्यंत सार्थक एवं सशक्त कानून है जिसके माध्यम से महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा को रोका जा सकता है। यह कानून हिंसा को रोकने हेतु सार्थक सिद्ध हो रहा है।

कार्यस्थल पर महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न

जब महिलाएं घरों से निकलकर वित्तीय मजबूती के लिए कार्य स्थलों पर नौकरियां करने आई तो पुरुषों द्वारा महिलाओं को कार्यस्थल पर भी लैंगिक रूप से उत्पीड़न या यौन उत्पीड़न दिया गया।

विशाखा बनाम राजस्थान राज्य नामक मामले में लैंगिक समानता के लिए कार्यरत एक गैर सरकारी संगठन द्वारा जनहित याचिका के माध्यम से संविधान के अनुच्छेद 14, 19 तथा 21 के अंतर्गत प्रदत्त अधिकारों को प्रभावी रूप से लागू कराने के उद्देश्य से एक प्रयास किया गया

इस बात को निर्णीत करते समय उच्चतम न्यायालय द्वारा लैंगिक समानता को सुनिश्चित करने वाले अंतरराष्ट्रीय अभिसमयों की विषय वस्तु पर विश्वास किया गया और स्पष्ट किया गया कि मूलभूत रूप से लैंगिक समानता की उपलब्धता निर्वाचित एवं सुनिश्चित करते समय मनो विचित गरिमा सहित कार्य करने का अधिकार तथा लैंगिक उत्पीड़न के विरुद्ध सुरक्षा सुनिश्चित करना अंतर्निहित दायित्व होता है।

इस निर्णय के माध्यम से उच्चतम न्यायालय ने कामकाजी महिलाओं के साथ हो रही यौन उत्पीड़न की घटनाओं की रोकथाम के लिए दिशानिर्देश जारी किए है।

महिला आरोपी की दंड प्रक्रिया संहिता 1973 के अंतर्गत सुरक्षा

महिला आरोपियों को दंड प्रक्रिया संहिता के अंतर्गत विशेष सुरक्षा दी गई है धारा 46 में गिरफ्तारी के नियम बताए गए हैं, जिसमें महिला आरोपी की गिरफ्तारी महिला अधिकारी द्वारा ही की जाएगी। महिला चिकित्सक द्वारा ही महिला आरोपी का परीक्षण किया जाएगा।

गर्भ का चिकित्सीय समापन अधिनियम 1971

इस अधिनियम के माध्यम से अबॉर्शन के नियम दिए गए हैं। कोई भी अबॉर्शन किस डॉक्टर द्वारा किया जाएगा या व्यवस्थित रूप से इस अधिनियम में बताया गया है। यह एक आपराधिक अधिनियम है, जिसमें गैर पंजीकृत चिकित्सक द्वारा गर्भ समापन हेतु दंड रखा गया है।

भ्रूण लिंग चयन निषेध अधिनियम 1994

इस अधिनियम के अंतर्गत लिंग के चयन को निषेध किया गया है एवं लिंग के परीक्षण को पूर्णतः अवैध बनाया गया है।

लेकिन आज महिलाओं के नाम पर अनेक लोग समाज में ज़हर घोलने का काम कर रहें हैं ! स्त्री को मातृत्व या नेतृत्व के रूप में नहीं उसको मातृ भोग्या बनाने पर तुले हैं ! आज युवक और युवतियाँ इस पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने के कारण महिला उत्पीड़न का कहीं न कहीं बड़ावा देखने को मिलता है ! आज लोग अपनी संस्कृति से विमुख होकर तरह तरह के डे मनाने लग गए हैं जैसे किस डे, लव डे, चॉकलेट डे आदि आदि ! ये फूहड़पन तो इस समाज को और गंदगी की तरफ ले जा रहा है तथा भारतीय संस्कृति में सम्मानित नारी ये कैसे शोभा दे सकता है? एक नवयुवती को सामाजिक समानता के नाम पर गंदगी में धकेलने की तैयारी की जा रही है ! आज कुछ मानसिक रूप से विकृत आज़ादी आज़ादी कह कर समाज को बरगलाने का जो कार्य किया है, वह भी निंदनीय है क्योंकि ये महिलाओं के लिए हर जगह नारे लगाते हैं कि आजादी से जियो, तुम जो करना चाहो वो करो ! आज ये दूषित प्रवर्ती के लोग छोटी छोटी बच्चियों को अपने परिवार रुपी संस्था से दूर कर अंधेरे कुएँ में धकेलने का प्रयास कर रहें हैं ! आज उनको समझाया जा रहा है कि एक पुरुष के प्रति जीवन भर का समर्पण क्यों करती हो ! आज इस नारी उत्थान के नाम पर चल रहे ड्रामे के दल दल में अपनी बच्चियों को बचाने के लिए परिवार के हर सदस्यों का कर्तव्य है !

क्योंकि महिला की कोख में एक परिवार ही नहीं अपितु एक राष्ट्र निवास करता है ! इसलिए भारतीय दर्शन चीख चीख कर कहता है कि

" मैं ही राष्ट्र की ध्वजा हूँ, मैं ही समाज का मस्तिष्क हूँ, मैं ही तेज़ास्विनी हूँ ! "

अतः आज समय की मांग है कि महिला उत्पीड़न के खिलाफ समाज में जन जागृति फैला दी जाए तथा मानवता को तार तार करने वाले दरिंदो को कठोर से कठोर कारावास तथा फांसी की व्यवस्था की जाए !

6.

बढ़ते बाल अपराध

बालक हमारे भविष्य की सबसे अमूल्य पूंजी होते हैं, बाल्यावस्था का प्रतिपल एक अध्याय की तरह होता हैं उनके लिए ! भाषा लिखने पढ़ने से पहले बालक अपने वातावरण को पढ़ रहा होता है, उसी से सीख रहा होता है ! यानि सोचिये कि हम अपने बच्चों के निर्माता बन जाते हैं, किताबों से भी पहले उनकी सबसे बड़ी किताब हम होते हैं जिनका प्रत्येक कृत्य बच्चों के लिए अनुकरणीय होता है चाहे वह अच्छा हो या बुरा ! अर्थात् हम अपने भविष्य को जैसा निर्मित कर रहें हैं वह उसी रूप में गढ़ कर सामने आ रहा है !

आज बात कर रहें हैं हम एक ऐसे विषय पर जिसको बहुत बार अपने आस पास महसूस किया होगा हमने और दोषी भी बना दिया होगा उन्हें जिनका कोई दोष ही नहीं !

बाल अपराध, ऐसा विषय है - जिसका दोषी, अपराध करने वाला बालक नहीं, उसका परिवार, समाज और ये राष्ट्र है ! कितनी अपंग स्थिति में होते हैं हम सब कि जिस समस्या को स्वयं उत्पन्न करते हैं उसके कारण हम अपनी भावी पीढ़ी को समझते हैं ! घर परिवार का कलह पूर्ण वातावरण बच्चों के निर्मल मन पर गहरा प्रभाव डाल देता है और ज़ब ये परिस्थिति लगातार उसके सामने रहती है, बड़ा होकर वह अपराध करने में लिप्त हो जाता है, बुरी आदतों का शिकार हो जाता है ! घर में प्रेम नहीं मिलता तो बाहर ढूंढ़ने लगता है और अपने मन की कमजोर अवसाद ग्रस्त स्थिति में बुरी संगत में पड़ जाता है !

जीवन का ताना बाना छोटी छोटी अनेक बातों से बुना गया है ! यहाँ कुछ भी निष्प्रयोजन नहीं होता ! परिवार राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई होती है, ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि हम में से हर एक परिवार अपने राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी निभा रहा है ! जिन्होंने अपने इस दायित्व को भली प्रकार समझा, उन्होंने देश को दयानन्द, विवेकानंद, राजाराममोहन राय, लाल बहादुर शास्त्री चन्द्र शेखर आज़ाद, राम प्रसाद बिस्मिल , नेहरू, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस दें दिए ! धन्य हैं हमारे वो पूर्वज जिनके परिवारों के इन बालको ने देश को अपने जीवन से सदा के लिए गौरन्वित कर दिया !

और वे बच्चे जो अपराधी बन गए वे भी इसी देश के उन परिवारों के ही कारण हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को बढ़ने के लिए वो स्वस्थ वातावरण नहीं प्रदान किया जिसमें उनका व्यक्तित्व निखर जाता !’

जन्म से कोई बालक अपराधी नहीं होता, वह उसे ही अच्छा समझता है जिसे उसे समझाया जाता है ! अच्छे बुरे का भेद समझ पाने के लिए उसकी बुद्धि ज़ब तक विकसित हो सके, तब तक परिवार में होने वाली हर गतिविधि को उसकी निर्मल बुद्धि जड़ तक पकड़ लेती है ! आगे चलकर कोई कितना ही उपदेश दें, उसकी निर्मल बुद्धि और मन पर पड़े स्थाई प्रभावो को निषप्रभावी नहीं कर पाता ! और परिणाम यही होता है कि कोई राम तो कोई रावण बन जाता है !

बाल अपराध पर भारत के क़ानून में जो कुछ लिखा गया है उन आंकड़ों पर विचार करने से पूर्व, हमें सताही रूप में इसे समझ लेना आवश्यक है ! देश हमसे बनता है, देश के प्रत्येक बच्चे का निर्माण ही राष्ट्र का निर्माण

जो वर्णमाला स्कूल में पढ़ाई जाती है वही तो हम सीखते हैं, बोलते हैं, तो नैतिकता की वर्णमाला क्यों नहीं ?

तो संस्कारों की वर्णमाला क्यों नहीं ?

हर इंसान को ईश्वर ने अक्षय पात्र दिया है जिसमें अच्छे विचारों, नैतिकता, धर्म और कर्तव्य को जोड़ा जा सकता है ! यह अक्षय पात्र ही उसकी कभी न खत्म होने वाली दौलत होती है ! जो माता पिता अपनी संतान को यह चिरस्थाई दौलत दें रहें हैं , वास्तव में यही वह पूँजी है जो उसके व्यक्तित्व को दुनिया में महापुरुष बना सकती है अन्यथा वही बच्चा अपनी समस्त प्रतिभाओं को अपने ही भीतर दबा देता है और फिर परिणाम यही होता है कि जिसमें असाधारण बन पाने की क्षमता होती है वही साधारण जीवन से भी परे हो जाता है और कभी कभी कुंठित होकर अपराध की ओर उन्मुख हो जाता है !

भारत में हमारी न्याय प्रणाली में किशोर अपचारिता अधिनियम को पारित किया है जिसमें कि ऐसे किशोर जो अपराधों में लिप्त हैं, के सम्बन्ध में क़ानूनी औपचारिकता को विस्तृत रूप में बताया गया है -

भारत में किशोर अपचारिता के बारे में निम्नलिखित बातें विशेष उल्लेखनीय हैं
1. भारत में होने वाले कुल अपराधों में किशोर - अपराधों का योगदान अपेक्षाकृत न्यून है ।

2. अनेक किशोर अपराधी स्वयं की प्रेरणा से अपराध नहीं करते अपितु प्रौढ़ों द्वारा उन्हें अपराध करने के लिए उकसाया जाता है । महिलाओं और बच्चों के साथ अनैतिक व्यभिचार का अपराध प्रायः दूसरों के द्वारा ही कराया जाता है ।
3. भारत में बाल एवं किशोर अपचारिता प्रधानतः पुरुष कार्यवाही है तथा महिला किशोर अपराधियों का अनुपात कुल अपचारिता का केवल 5 से 10 प्रतिशत ही है जबकि अमेरिका में यह अनुपात 22 से 25 प्रतिशत तक है ।

4. भारत में किशोर अपचारिता का विस्तार देश भर में एक समान नहीं है । बिहार , उत्तर प्रदेश , उड़ीसा , मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र के मध्यवर्ती राज्यों में कुल अपचारिता की 45 प्रतिशत अपचारिता रिकार्ड की गई है । इनकी तुलना में अन्य राज्यों में अपचारिता की औसत अपेक्षाकृत कम है ।

5. भारत में किशोर - आपराधिक संगठनों को पनपने की कोई गुंजाइश नहीं है क्योंकि सामान्यतः भारतीय समाज ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न नहीं होने देना चाहता जो बच्चों को घर से बाहर निकलकर सड़कों पर भटकने के लिए विवश करे ।

किशोर अपचारिता एवं सुधारक संस्थाएँ

ब्रिटेन की बोर्टल संस्थाओं में पन्द्रह वर्ष से इक्कीस वर्ष के बीच के आयु के अपचारी - किशोरों को रखा जाता है । केवल ऐसे अपचारी - किशोरों को ही बोटल में भेजा जाता है जिनका अपराध कारावास की सजा से दण्डनीय हो । उन्हें बोर्टल में रखकर उचित प्रशिक्षण दिया जाता है । बोर्टल में रखने की अधिकतम अवधि दो वर्ष है , लेकिन अपचारी - किशोर को न्यूनतम छ : माह के बाद बोर्टल से छोड़ा जा सकता है । बोर्टल में रखे जाने की अनुशंसा करने के पूर्व यह सुनिश्चित कर लिया जाता है कि किशोर मानसिक और शारीरिक दृष्टि से बोर्टल में प्रशिक्षण के लिए योग्य है अथवा नहीं । बोर्टल संस्थाएँ अपचारी किशोरों को उचित औद्योगिक प्रशिक्षण देकर तथा अनुशासन में रखकर भावी सामान्य जीवन के लिए तैयार करती हैं । राज्य द्वारा युवा - अपराधियों को सुधारने और पुनर्वासित करने का यह एक प्रभावी तरीका है । इसमें किशोरों के लिए आवास , भरण - पोषण , चिकित्सा - परीक्षण , शिक्षा प्रशिक्षण तथा मनोरंजन आदि की समुचित व्यवस्था रहती है । इसमें प्रशिक्षण व्यवस्था विभिन्न सुनियोजित चरणों में की जाती है तथा अपचारी किशोर को समाज में घुलने - मिलने का पर्याप्त अवसर दिया जाता है , ताकि वह स्वयं को समाज में पुनर्वासित कर सके । बोर्टलों में अपचारी किशोरों के अनुशासन और प्रशिक्षण पर सर्वाधिक ध्यान दिये जाने पर भी यह व्यवस्था विशेष सफल नहीं हो सकी है । यह इसी बात से सिद्ध हो जाता है कि हाल ही के वर्षों में

इन संस्थाओं से अनेक अपचारी किशोर निकल भागने में सफल हुए हैं । संभवतः बोर्टलों की असफलता का मुख्य कारण इन संस्थाओं की न्यूनता , अपचारी किशोरों की निरन्तर बढ़ती हुई संख्या तथा इनमें आवश्यक सुविधाओं का अभाव

भारत में बोर्टल संस्थाएँ (Borstals in India) भारत में बोर्टलों की स्थापना बोर्टल स्कूल एण्ड रिफार्मेटरी स्कूल्स एक्ट , 1897 के अन्तर्गत की गई . है । इन बोटलों में किशोर न्यायालय द्वारा सिद्ध दोष किये गये अपचारी - किशोरों को उचित शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए रखा जाता है । यहाँ से छूटने के बाद किशोरों को शर्तो - सहित या रहित न्यायालय द्वारा नियुक्त किये गये अधिकारी के पर्यवेक्षण में रखा जाता है ।

अनेक राज्यों ने अपचारी किशोरों को सदाचार के बन्धपत्र या प्रतिभू पर बोर्टल से रिहा करने के नियम बनाये हैं । यदि बन्धपत्र पर मुक्त किये गये अपचारी किशोर द्वारा पुनः अपराध किया जाता है , तो उसके माता - पिता या संरक्षक को अर्थ दण्ड का दण्डादेश दिया जा सकता है वर्तमान में देश भर में अनेक बोटल संस्थाएँ कार्यरत हैं । तथापि इनसे छूटने के बाद अपचारी किशोरों की पश्चात्वर्ती देख - रेख (After care) की उचित व्यवस्था के अभाव में इनकी उपयोगिता पर प्रश्न - चिह्न लगा हुआ है ।

विशेषकर महाराष्ट्र और मद्रास राज्यों में बोर्टल संस्थाएँ प्रभावी ढंग से कार्य कर रही हैं । इनमें युवा - अपराधियों को न्यूनतम दो - तिहाई अवधि बोर्टल में बिता लेने के पश्चात् लाइसेंस (Licence) या पैरोल पर छोड़ा जाता है । तत्पश्चात् , अवधि पूर्ण होने तक उन्हें परिवीक्षा अधिकारी के पर्यवेक्षण में रखा जाता है । इन राज्यों ने युवा एवं किशोर अपराधियों के बोर्टल से छूटने पर उनके पुनर्वास के लिए पश्चात्वर्ती - देखरेख संगठन (After Care Associations) और बाल - सहायता समितियाँ (Children Aid Societies) गठित की हैं । गुजरात , उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के राज्यों ने भी अपचारी किशोरों की अनुवर्ती (follow up) सहायता हेतु उचित व्यवस्था की है जिसके अन्तर्गत

परिवीक्षा अधिकारी निश्चित अन्तरालों में बोर्टल से मुक्त किये गये किशोरों के घर जाकर उनके बारे में जानकारी लेता रहता है तथा उन पर उचित निगरानी रखता है । ऐसे किशोरों पर परिवीक्षा अधिकारी का नियन्त्रण तीन वर्ष से अधिक नहीं हो सकेगा ।

महाराष्ट्र में किशोर अपचारियों के लिए अनेक उपचार - संस्थाएँ कार्य कर रही हैं जिनमें सेंट केथोलीन होम , अन्धेरी ; डेविड ससून औद्योगिक विद्यालय , माहिम ; चेम्बूर बाल - गृह , मानखुर्द ; सेल्वेशन आर्मी होम , सायन , येरवडा औद्योगिक विद्यालय , पुणे ; सेवा - समिति नासिक ; श्रद्धानन्द महिला अनाथाश्रम , मुंबई , तथा महिला सेवाश्रम वर्धा , विशेष उल्लेखनीय हैं । चेम्बूर बाल - गृह में ग्रामीण क्षेत्रों के किशोरों तथा बच्चों को रखा जाता है जबकि डेविड ससून औद्योगिक शाला में शहरों के अनाथ और बिगड़े हुए किशोरों को सुधार हेतु रखा जाता राजस्थान में उदयपुर का विद्या भवन भी एक प्रकार की बोर्टल संस्था है जहाँ अपचारी किशोरों को रखा जाता है ।

मध्य प्रदेश में नरसिंहपुर और जबलपुर में किशोर गृह कार्य कर रहे हैं । इसी प्रकार का एक किशोर सुधार - गृह बिहार के हजारीबाग में स्थापित है । उपर्युक्त सुधार - गृहों के अतिरिक्त पुणे , भड़ौच , दिल्ली , अहमदाबाद , सूरत , शोलापुर , सतारा , धारवाड़ आदि स्थानों में अनेक स्वयंसेवी बाल - कल्याण संस्थाएँ बालकों तथा किशोरों के उद्धार कार्य में लगी हुई हैं । भारत की किशोर - न्याय पद्धति के अनुभव के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि किशोर अपचारियों के लिए उपचारात्मक सेवा अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है । सन् 1950 में भारत में स्थापित की गई अखिल भारतीय अपराध निवारण समिति (All India Crime Prevention Society) राष्ट्रीय स्तर पर किशोर अपचारिता के निवारण की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है । इस समिति को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हो चुकी है और राष्ट्र संघ (United Nations) ने भी इसे मान्यता प्रदान कर दी है । इस समिति ने अपराधों के निवारण हेतु वर्तमान भारतीय आपराधिक विधि तथा साक्ष्य विधि को संशोधित कर उसे

आधुनिक उपचारात्मक दण्ड व्यवस्था के अनुरूप बनाये जाने का सुझाव दिया है । सुधार गृह या कारागार से मुक्त हुए अपराधियों के पर्यवेक्षण तथा मार्गदर्शन हेतु परिवीक्षा सेवा का विस्तार किया जाना आवश्यक है समिति ने आपराधिकता पर नियन्त्रण पाने हेतु यह सुझाव भी दिया है कि रिहाई के पूर्व कारावासी को रोजगार उपलब्ध कराने से उसका पुनर्वास सरल हो जाएगा । इस हेतु यदि आवश्यक हो , तो अधिकतम आयु में छूट के प्रावधान रखा जाना भी उचित होगा ।

अखिल भारतीय अपराध निवारण समिति ने किशोर अपचारिता को नियन्त्रित रखने हेतु एक सुझाव यह भी दिया है कि पुलिस और जनता के बीच जन सहयोग बढ़ाया जाए । पुलिस से यह अपेक्षित है कि वह किशोरों के सुधार एवं पुनर्वास - कार्य से जुड़ी समाजसेवी संस्थाओं की सक्रिय रूप से सहायता करें । इस हेतु पुलिस मुख्यालयों में पुलिस किशोर ब्यूरो (Police Juvenile Bureau) की स्थापना तथा पुलिस - बल में महिलाओं की संख्या में वृद्धि करना उपयोगी सिद्ध होगा ।

बाल और किशोर अपचारिता पर हुए अनुसंधानों से यह निष्कर्ष निकलता है कि इनमें आपराधिकता की प्रवृत्ति को रोकने के लिए सर्वोत्तम उपाय यह है कि घरों और विद्यालयों में इनकी शिक्षा और प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था की जाए । इसमें अपचारी किशोरों के पालकों और शिक्षकों का परस्पर सहयोग भी पर्याप्त सहायता कर सकता है । इस प्रयोजन के लिए हाल ही में कहीं - कहीं पालक संघ (Guardian Guild) गठित किये गये हैं , जो अपने बच्चों के विषय में शिक्षकों से सामूहिक रूप से चर्चा करके उनकी समस्याओं का समाधान करा लेते हैं । कहना न होगा कि इस कार्य में “ परिवार " की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि बालकों तथा किशोरों का अधिकांश समय परिवारजनों में ही व्यतीत होता है । यदि परिवार के सदस्य अपने बालकों के प्रति सजग रहें तथा उनके प्रति प्रेम , सहानुभूति , सहयोग , विश्वास एवं आत्मीयता की भावना

रखें , तो बच्चों के बिगड़ने का कोई कारण नहीं रह जाता । प्रायः देखा गया है कि परिवार से उपेक्षित या प्रताड़ित बालक और किशोर ही आपराधिकता की ओर कदम बढ़ाते हैं । अंत में यह उल्लेख कर देना पर्याप्त होगा कि अधिकांश किशोर परिस्थितिवश अपचारी बन जाते हैं न कि स्वेच्छा से । अतः यदि उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों तथा वातावरण से दूर रखा जाए या उनकी प्रतिकूल परिस्थितियों को सुधारा जाए , तो उन्हें अपचारी बनने से बचाया जा सकता है । इस हेतु भारतीय किशोर - न्याय प्रशासन में सामाजिक चिकित्सा पद्धति (Social Therapy System) अपनाई जाना श्रेयस्कर होगा । इसके अतिरिक्त किशोर न्याय अधिनियम के क्रियान्वयन पर आवश्यक निगरानी रखी जाना भी आवश्यक है ताकि इसके अधीन कार्यरत कार्यकर्ता एवं प्राधिकारी अपना दायित्व निष्ठापूर्वक निभाएँ ।

किशोर अपराधियों के प्रति न्याय के उचित संचालन हेतु एक लोकपाल (Ombudsman) की नियुक्ति की जाए जिसे किशोर न्याय अधिनियम के अधीन कार्यरत विभिन्न संस्थाओं तथा प्राधिकारियों के कार्यों के निरीक्षण , अंकेक्षण तथा जाँच आदि की अधिकारिता प्राप्त हो । इससे जहाँ एक ओर किशोर न्याय का लोकतंत्रीकरण संभव हो सकेगा वहीं दूसरी ओर इससे जुड़े हुए प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा किये जा रहे इस विधिक - सामाजिक कार्य पर प्रभावी नियंत्रण रखने में भी सफलता मिल सकेगी ।

अपचारी किशोर की दोष - सिद्धि होने पर भी उसे कारागार न भेजा जाकर किसी किशोर - गृह में रखे जाने का आदेश दिया जाता है (The Juvenile is not punished but booked to a Juvenile Home) । कारागार और सामान्य दण्ड न्यायालय की कार्यवाही और प्रक्रिया से अपचारी को पूर्णतः अलग रखे जाने का उद्देश्य उन्हें प्रौढ़ - अपराधियों की संगति से बचाना है ।

जहाँ तक सम्भव हो , अपचारी को उसके माता - पिता , संरक्षक या किसी योग्य व्यक्ति की देख - रेख में रहने के लिए घर भेज दिया जाता है , यदि इनमें से कोई न हो , तो उसे किशोर - गृह में रखा जाता है , परन्तु किसी भी

स्थिति में उसे कारागृह में नहीं भेजा जा सकता । अपचारी को सदाचरण की परिवीक्षा पर भी छोड़ा जा सकता है ।

सिद्ध - दोष होने के विधिक परिणामों तथा लांछन से संरक्षण – किशोर न्यायालयों की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य अपचारी को सुधारने के अतिरिक्त यह सुनिश्चित करना भी है कि उनके आपराधिक कृत्यों के विधिक परिणामों का उनके भावी जीवन पर दुष्प्रभाव न पड़े और उनके चरित्र पर लांछन का कलंक न लगने पाए । यही कारण है कि किशोर अपराधी को ' अपराधी ' न कहा जाकर ' अपचारी ' कहा जाता है ।

इसी प्रकार उसकी दोष - सिद्धि होने पर उसे दण्डादेश न दिया जाकर ' दोष सिद्धि पर पारित आदेश दिया जाता है , ताकि वह अपराधी ' कैदी ' कहलाए जाने के लांछन से बच सके ।

किशोर न्याय अधिनियम की धारा 25 के अनुसार किशोर न्यायालय द्वारा अपचारी किशोर दोषी पाया जाने पर भी वह भावी जीवन में किसी ऐसी निरर्हता (disqualification) के अधीन नहीं होगा , जो विधि के अन्तर्गत अपराधी की दोष - सिद्धि के साथ जुड़ी रहती है ।

भारत में बाल अपराध को रोकना या समाप्त करना अंततः न्यायलय या कानून द्वारा नहीं वरन केवल मात्र परिवारों में एक स्वस्थ वातावरण के द्वारा ही संभव है ! यदि समस्या को मूल से निराकृत किया जाये तभी हम देश का भविष्य उज्जवल बना सकेंगे !

7.

रक्षक ही बने भक्षक

समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिए जिस व्यवस्था का निर्माण किया जाता है तथा किसी भी व्यक्ति को कोई परेशानी या तकलीफ ना हों, उस कानून व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए पुलिस तथा प्रशासन की आवश्यकता होती है ! जिससे अपराधियों पर शिकंजा कस सकें तथा समाज व राष्ट्र को सही दिशा मिल सकें ! जिस प्रकार बच्चे को सही गलत के रास्ते पर रोकने वाली सर्व प्रथम माँ होती है उसी प्रकार बच्चे के भविष्य का निर्माता उसका शिक्षक तथा गुरु होता है ! ये लोग समाज में रक्षक की तरह कार्य करते हैं, उसी प्रकार किसी भी राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा करने वाला फ़ौज़ी या सैनिक हर समय अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाता है, उसे पता

होता है उसकी जिम्मेदारी पूरे राष्ट्र को सुरक्षित रख सकती है ! कुछ क्षेत्रों में जैसे चिकित्सक, न्यायधिकारी, परिवार में बुजुर्ग तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिए पुलिस तथा सीमाओं की रक्षा के लिए सैनिक, अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र की आन मान शान के लिए सदा तत्पर रहते है ! अगर यही लोग ही अपनी जिम्मेदारी से मुकर जाएं तो परिवार, समाज समाज, राष्ट्र को विनाश से कोई नहीं बचा सकता !

कहा भी गया है -

" ज़ब मेड ही खेत को खाने लगें, तब खेत की रक्षा कौन करें ! "

अर्थात् रक्षा करने वाला ही भक्षक बन जाएं ! फिर उसे नष्ट होने से कौन बचा सकता है।

परिवार , समाज तथा राष्ट्र की भी यही स्थिति है। इनकी रक्षा करने वाले ही इन्हें सुदृढ तथा मजबूत बनाते हैं। लेकिन आज कुछ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए अपनी जिम्मेदारियों से मुख मोड लिया है। जिससे इस समाज में अराजकता तथा आपराधिक गतिविधियों का बोलबाला बढ जाता है।

आज ऐसी कुछ घटनाओं को हम आपके सामने प्रस्तुत करते हैं, जिससे समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने वाले ही कानून का उल्लंघन करते हैं तथा जिनको समाज भगवान का दर्जा देता है आज वे लोग भी अपनी ओछी हरकतों से नहीं चूकते हैं ।

खाकी वर्दी की स्थिति -

नागरिकों की रक्षा तथा सुरक्षा के लिए और आपराधिक गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए सरकार तथा प्रशासन ने खाकी वर्दी को चुना। जिसका कार्य समाज में शान्ति व्यवस्था तथा लोगों के मन में विश्वास पैदा करना था । लेकिन आज की स्थिति कुछ अलग ही है। अपराधियों में खाकी वर्दी का कोई खौफ नहीं तथा सामान्य जनता का पुलिस पर से भरोसा उठ गया है। आज चौकी और थाने भ्रष्टाचार के अडडे बन गए हैं।

आज की स्थिति इतनी दयनीय है कि सामान्य जनता की एफ आई आर तक दर्ज नहीं होती तथा उनकी आवाज को डरा धमका कर दबा दिया जाता है। ना ही उनको न्याय मिल पाता है। और अपराधी बेलगाम होकर अपराध करते रहते हैं। कई बार तो खाकी वर्दी का खौफ दिखाकर पुलिसकर्मी अश्लील हरकतें तथा सामान्य जन से अभद्रता कर बैठते हैं। ऐसा लगता है जब रक्षा करने वाले ही गिद्ध की तरह पैनी दृष्टि जमाए बैठे हों तो सामान्य जनता का भरोसा उठना तो लाजिमी है। अगर ले दे कर भी किसी व्यक्ति का काम हो

जाए तो आगे चलकर अदालतों की स्थिति और भी दयनीय है। वहां पर व्यक्ति को न्याय मिलने में 10- 20 साल गुजर जाते है लेकिन व्यक्ति को न्याय ही नहीं मिलता, मिलती है केवल तारीख । कई बार तो न्याय मांगने वाला ही दुनिया से चला जाता है। लेकिन उसको अब न्याय कौन दे ?

स्थिति यह है कि आज अदालतों में भी फाइल को आगे करने के लिए बाबू को या पेशगार को रिश्वत देनी पडती है। तब जाकर के फाइल आगे पहुंचती है। यह सारा ड्रामा अदालतों की आंख के नीचे होता है और न्यायदाता भी अपनी आंखों पर पटटी बांधकर बैठा होता है। अब व्यक्ति जाए तो कहां जाए ? जब रक्षा करने वाले ही भक्षक की अवस्था में बैठे हों तो न्याय तथा सुरक्षा कैसे मिल सकती है। अतः सरकार को चाहिये कि निरंकुश हुए पुलिसकर्मी तथा अदालतों में बैठे हुए रिश्वतखोरों पर कडी से कडी कार्यवाही हो और हर केस की अवधि भी निश्चित होनी चाहिये जिससे व्यक्ति को न्याय मिल सके और सामान्य जनता का विश्वास प्रशासन तथा सरकार पर बना रहे। और अपराधियों पर नकेल कस जाए।

चिकित्साकर्मियों की स्थिति

चिकित्साकर्मियों को समाज तथा राष्ट्र में भगवान का दर्जा दिया जाता है। जो हर समय दूसरों की जान बचाने के लिए तत्पर रहता है। जिस पर सदियों से आम जनता का विश्वास है कि यह वैद्य या चिकित्सक हमारा सही इलाज कर सकता है। और हमें पुनः जीवन दान दे सकता है। लेकिन आज डिलेवरी के केसों में आंकडे डराने वाले हैं। जहां पूरी दुनिया में मात्र 15 प्रतिशत डिलेवरी सिजेरियन तरीके से होती हैं वहीं धन के स्वार्थ के कारण आज भारत में यह आंकड़ा 60 प्रतिशत तक पहुंच चुका है जो अपने आप में एक शर्मनाक विषय है। आज भारत में जहां महिला की नार्मल डिलेवरी हो सकती है वहां भी चिकित्सक धन के लोभ के कारण सिजेरियन डिलेवरी कर देते हैं। भारत में अधिकांश डिलेवरी बेड पर लेटा कर करवाई जाती हैं जो कि क्राइम करने के बराबर है। बेड पर लेटा कर प्रसव करवाना एक अंग्रेज शासक द्वारा चलाई गई कुप्रथा थी, जिसे सबसे ज्यादा भारतीयों ने अपनाया है। जिससे महिला के प्रसव के दौरान उसे सही स्थिति नहीं मिल पाती है जिससे बच्चे की स्ट्रेस कैपिसीटी भी नहीं बढ पाती है। आज चिकित्सकों की स्थिति सेवा भाव करने

की नहीं बल्कि किस तरह अधिक पैसा कमाया जाए ऐसी बन गई है। आज अखबारों तथा न्यूज चैनलों पर कई बार देखा तथा सुना होगा कि मृत व्यक्ति को वेंटिलेटर पर लेटा कर बिल बनाने का कार्य करते हैं तथा जितना शोषण हो सके चूकते नहीं हैं और करोना काल की बात करें तो जहां सरकार तथा लाखों चिकित्सकों ने अपनी जान पर खेल करके लोगों की जान बचाई लेकिन कुछ लोगों की वजह से पूरे चिकित्साकर्मियों को शर्मिन्दगी महसूस करनी पडती है।

आपदा के समय स्वार्थी लोगों की स्थिति

जब जब राष्ट्र में आपदा आई है तब तब गिद्ध की तरह पैनी दृष्टि जमाए स्वार्थी लोगों ने समाज व राष्ट्र को शर्मिन्दगी महसूस कराई। आज इन लोगों ने आपदा के समय एक रूपये के सामान को दस रूपये में बेचने का कार्य किया है। तथा कोरोना काल मे तो इंजेक्शनों , आक्सीजन के सिलेण्डरों को चार गुने मूल्यों पर जरूरतमन्दों को बेचा है ! इससे पता चलता है कि इंसान कितना स्वार्थी तथा मानवता विहीन हो गया है जहां उसे आज स्वंय अपने लोगों की सहायता के लिए खडा होना चाहिये था वह सामान्य जन का शोषण करने में तनिक भी लज्जा महसूस नहीं करता है।

जो इंसान मानवता तथा इंसानियत के लिए जाना जाता था। आज वह समाज और राष्ट्र को किस ओर ले जा रहा है यह सोचने का विषय है। आज इंसानियत इतनी मर चुकी है कि लोग अपने स्वार्थ के कारण अपने राष्ट्र तथा समाज का हित भी नहीं देख पाते हैं। उन्हें याद नहीं है कि अगर समाज और राष्ट्र सुरक्षित है तो वह भी सुरक्षित हैं। अन्यथा उनका यह स्वार्थ उन्हीं के लिए घातक सिद्ध होगा । दासता की जंजीरों में जकडे हुआ पशु को पता होता है कि

गुलामी की जंजीरें क्या होतीं हैं अतः हम सबको चाहिये कि जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएं ! जिस विश्वास से हमने उनको अपने सिर पर बैठा कर रखा है उस विश्वास को न तोडें। अतः व्यक्ति को चाहिये कि वह अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्यों को बखूबी निभाते हुए समाज तथा राष्ट्र के हित की सोचे , इसमें हम सबका ही भला है।

8.

संस्कृति से विमुख होता मानव

हाँ तेज़ चमक है बहुत आस पास,

फिर भी अपनी रोशनी में

न इतने तुम खो जाना!

कि उन अंधेरों को भूल जाओ,

जहाँ चिराग तुम्हें जलाने हैं!!

कहाँ है संस्कृति ? शायद किताबों में ! हमें अच्छा लगता है संस्कृति पर बात करना! लेकिन अपनाना या अमल करना बोझ लगता है ! हम स्वच्छन्द जीवन को स्वतंत्र जीवन मानते हैं ! स्वतंत्रता में गरिमा हो सकती है ये बात स्वीकार नहीं है हमें ! किसी बड़े का कहा मानना, झुकना या हारना नहीं, बल्कि उनका सम्मान करना होता है ये परिभाषा हम नहीं समझ पाते !

दरअसल देश का विकास बड़ी- बड़ी नहीं बल्कि छोटी छोटी गहरी जीवन की बातों में छिपा है ! आसमान पर पहुँचा मानव अपने घर में बड़े छोटों का फर्क तक नहीं समझ पाता ! ये आसमान पर पहुंचना हुआ या अपनी ही धरती को भूलना ?

किताबें हमें डिग्रियां दिलाती हैं जिनसे अमुख अमुख क्षेत्र में अपना योगदान देकर देश के विकास में अपनी भूमिका निभाई जा सके ! लेकिन किताबी ज्ञान में बहुत आगे बढ़ कर भी यदि व्यवहारिक ज्ञान न सीख पाए तो उनत्ति नहीं बल्कि अवनति के मार्ग खुल जाते हैं !

ऐसी उन्नति का कोई निश्चित भविष्य नहीं होता! क्योंकि बिना जड़ के कोई पौधा वृक्ष नहीं बन सकता ! वृक्ष बनने के लिए जड़ों से जुडा रहना जरूरी होता है ! अर्थात् हमें आधुनिक तो होना चाहिए लेकिन संस्कृति से पलायन करके नहीं !

आज आदमी की आदमियत से ही पहचान छूट गई है ! एक पुतला बन कर रह गया है! वो वैसा करना चाहता है जिस से दुनिया वाह वाही करे ! अपनी आत्मा की आवाज़ सुनता नहीं है और इंसान बनने की बजाय अपने नाम को डिग्रियों पर चिपका कर पहचान पाता रहता है ! उसे फर्क नहीं पड़ता किसी के क्रन्दन से, किसी के दुःख से, वो केवल

प्रगति करना चाहता है ऐसी जिस पर आस पास के लोग शाबाशी, कोरी वाह -वाही ठोक सकें!

आज यदि कोई व्यक्ति किसी की मदद के लिए कुछ करता है,तो दुनिया उसे बेवकूफ समझती है!तो वह वो करने लगता है कि दुनिया उसे समझदार कहे ! अंततः पीढ़ी दर पीढ़ी हम दूर होते जाते हैं अपनी ही संस्कृति से, संस्कारों से ! और खुद में बन गए इस स्वभाव का हमें स्वयं तक को बोध नहीं होता, क्योंकि दुनिया ये नहीं पूछती कि तुममें कितनी मानवीयता है ? तुम अपने कर्तव्यों के प्रति कितने जागरूक हो? दुनिया तो केवल एक ही सवाल करती है, तुम कितने सफल हो ? कितना पैसा कमाते हो ? आज आदमी को आदमी नहीं बनने दिया जाता ! आज आदमी को आदमियत छोड़ देने को विवश किया जाता है !

मशीनी मानव में करुणा, दया, सहानुभूति, कर्तव्य, धर्म कुछ नहीं बचा ! वो एक रोबोट बन गया है ! इसका एकमात्र एक ही कारण है - संस्कृति से पलायन !

प्राचीन वैदिक संस्कृति ने हमें इतनी उन्नत शिक्षा और जीवन शैली प्रदान की थी कि देश की भूमि अनेकों क्रांतिवीर और लोकनायकों के योगदान से धन्य हो गई !

वही पूर्वजों की पुण्य धरती, आज उस शिक्षा प्रणाली से विमुख हो चुकी है ! अब समय के परिवर्तन ने इंसान के मन में विकृत विचारों को जन्म दे दिया है ! वह अब सही को गलत और गलत को सही समझता है !

पाश्चात्य संस्कृति को अपना कर अपनी संस्कृति को अनादर देना कहाँ की बुद्धिमता है ?

हमारे देश की बहुरंगी संस्कृति को यदि अपनाया जाए तो वास्तविक रूप में हम प्रगति के सोपान प्राप्त कर सकते हैँ ! किन्तु चूंकि हमारे देश की भावी पीढ़ी को अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से ही शिक्षा प्राप्त हो रही है तो धीरे धीरे वैदिक शिक्षा और गुरुकुलों में बनने वाली युवा पीढ़ी अब पूर्णतया पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करने लगी है ! इसी पाश्चात्य संस्कृति का ही परिणाम है कि हमारे देश में भी बच्चे

बहुत जल्द ही माता -पिता से अलग रहकर जीवन बिताना अधिक पसंद करने लगें हैं !

उन्हें खुद पर किसी तरह का बंधन अच्छा नहीं लगता! कोई भी राय वे नहीं चाहते, केवल अपनी ही राय पर चलना चाहते हैं ! ये बिल्कुल वैसा ही है मानों बिना नींव पर खड़ा घर, जो होना संभव ही नहीं है !

हमारे संस्कार, हमारी ज़मीन यही हमारी नींव होती है, जैसे नींव के बिना कोई इबारत ख़डी नहीं हो सकती उसी प्रकार अपनी संस्कृति रुपी जड़ से कटकर हम फल फूल नहीं सकते!

आज की युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से परे न जाने देने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका परिवार एवं शिक्षा की है ! यदि हम में से प्रत्येक जागरूक व्यक्ति अपनी ओर से प्रयास करे तो समाज में परिवर्तन लाना संभव हो सकेगा !

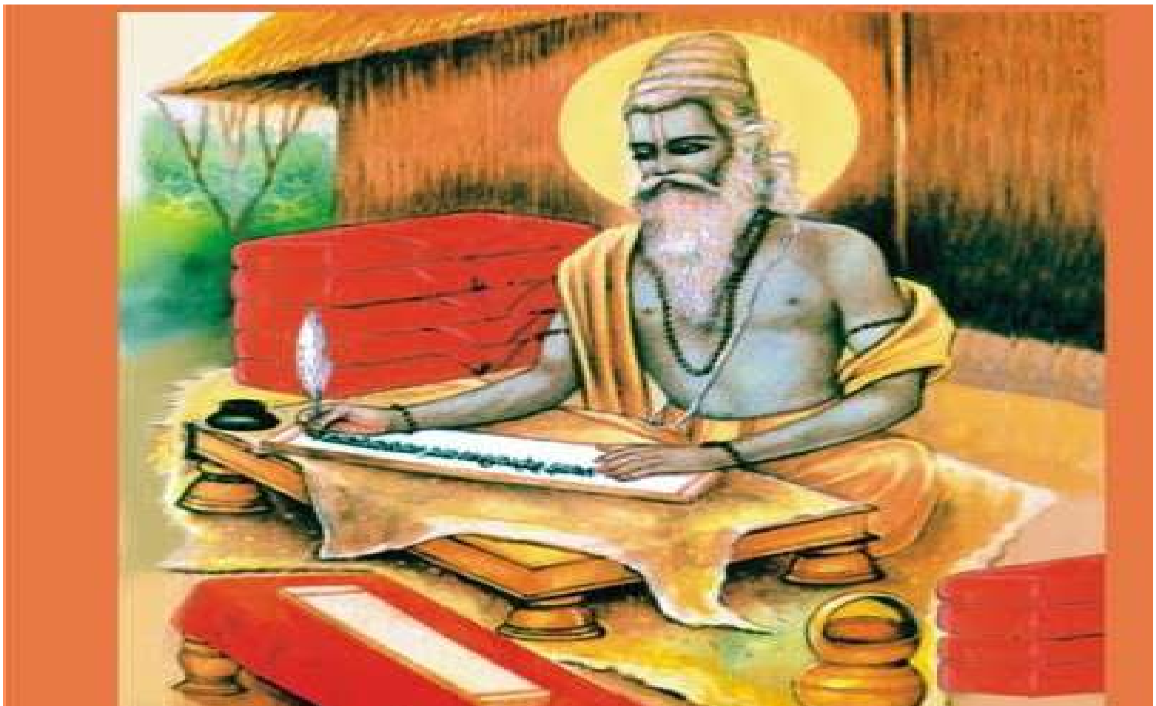

गुरुकुलों में विद्यार्थी अध्ययन करके उत्तम मानव बनकर निकलते थे जो जीवन की हर परीक्षा को पास सकते थे, यही हमारे महापुरुष बने, जिन्होंने अपनी जीवनी को एक उदाहरण बना दिया !

किन्तु आज ऐसा कुछ नहीं ! अत्यंत दयनीय स्थिति है कि बालक के भीतर बाल्यावस्था से ही वे संस्कार नहीं रोपे जाते!जो कि वह संसार में अपना एक स्थान बना सकें ! अवश्यकताओं को पूरा करते करते माता पिता उनको केवल सामान ही उपलब्ध करवाते हैं तो संस्कृति से तो वे परिचित ही नहीं हो पाते ! जो प्राचीन समय मे सर्वश्रेष्ठ संस्कृति थी जिसके अनुसरण के लिये लोग विदेशो से इस पुण्य भूमि पर आने मे अपना सौभाग्य समझते थे!आज उस संस्कृति को अपने ही लोगों ने मजाक का विषय बना कर रख दिया है!आज इन्ही लोगो को देखकर मैकाले ने सही कहा था –

“अगर भारत की गुरुकुलीय शिक्षा पद्द्ति को समाप्त कर दिया जायें, तो यह लोग केबल देखने मे भारतीय रहेंगे!लेकिन मानसिक रुप से गुलाम की भाति होंगे!”

आज की स्थिति को देखकर ऐसा लगता है जो मैकाले ने सोचा था बह अब साकार हो गया है! अब हम लोग देखने मे ही भारतीय लगते है लेकिन वेशभूषा, खानपान तथा मानसिक विचारों से भी हीन हो चुके है!अगर समय रहते हमने नहीं विचारा तो अपनी भावी पीढ़ी को भी मानसिक तौर पर विचारों से हीन कर देंगे!किसी ने कहा है –

“सुबह का भूला शाम को घर आ जायें, तो उसे भूला नहीं कहा जाता!”

अत: हमें अपनी सर्मद्ध संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए!

संस्कृति ही संस्कारों की जननी होतीं है ! मानव समाज के विकास तथा उसके उत थान के लिए अच्छे, स्वस्थ, मानवीय संस्कारों की आवश्यकता होतीं है ! ये संस्कार हमें भारतीय संस्कृति से ही मिल सकते है ! यह संस्कृति समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए तथा उसकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए बनी है ! ऐसी समीरद्ध शाली संस्कृति को छोड़कर हम अपने पूर्वजों की वाहक रही परम्परायें तथा आने वाली पीदी को क्या सन्देश देना चाहते हैँ ! यह हमें स्वयं ही विचारना है !

Nayi goonj publication

GOONJNAYI@GMAIL.COM

2022

www.nayigoonj.com